ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अगस्त-२०१८

अगस्त-२०१८ ◆ वर्ष ७ ◆ अंक ०३ ◆ उदयपुर

मात-पिता जैसा
सुखमय भी,
यदि हो राज्य विदेशी।
दयानन्द कहते सर्वोपरि,
फिर भी राज्य स्वदेशी।।

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर–313001 (राज.)

₹ १० ८०

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम !
एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

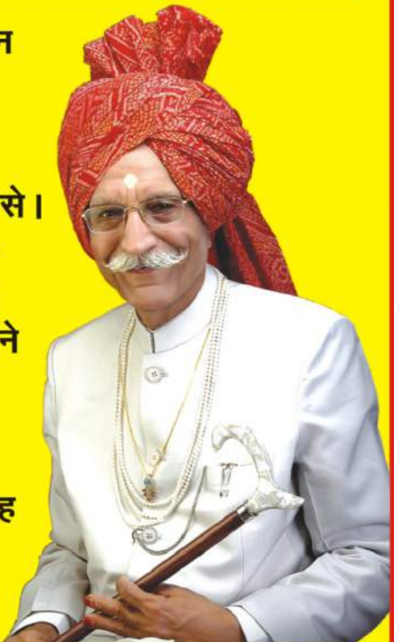

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे-सब्जी, घी-तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च-मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

MDH
मसाले
असली मसाले सच-सच

ESTD. 1919
महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली – 110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - 11000 रु.	$ 1000
आजीवन -1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय - 400 रु.	$ 100
वार्षिक - 100 रु.	$ 25
एक प्रति - 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११९
श्रावण कृष्ण दशमी-एकादशी
विक्रम संवत्
२०७५
दयानन्दाब्द
१९४

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

August - 2018

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन 3500 रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

समाचार २५

हलचल २६

०४ स. प्र. महोत्सव अक्टूबर २०१८
०५ वेद सुधा
१० मेरी भी सुनो
११ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/१८
१२ सर्वश्रेष्ठ शिक्षा पद्धति
१४ देवनागरी की वैज्ञानिकता
१७ सृष्टि रचना विषय में ....
२१ ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता
२७ स्वास्थ्य- बरसात में स्वस्थ कैसे रहें
२९ कथा सरित- चिल्लाओ मत
३० सत्यार्थ पीयूष- विकासवाद ......

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ७ अंक - ०३

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 2417694, 09314535379, 09829063110
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

।।ओ३म्।।

सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव

6 से 8 अक्टूबर 2018

स्थान- नवलखा महल, गुलाब बाग
उदयपुर (राज.)

आमन्त्रित अतिथि, विद्वान् एवं संन्यासीवृन्द

स्वामी प्रणवानन्द जी; दिल्ली, स्वामी सुमेधानन्द जी; (सांसद) सीकर, स्वामी ओम् आनन्द जी; चित्तौडगढ़, स्वामी शारदानन्द जी; आबूरोड, स्वामी आर्यवेश जी; दिल्ली, स्वामी आर्येशानन्द जी; पिण्डवाडा, आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक; भीनमाल, साध्वी उत्तमा यति जी; अजमेर, साध्वी पुष्पा जी सरस्वती; रेवाड़ी, महामहिम गंगाप्रसाद जी, राज्यपाल मेघालय; न्यायमूर्ति श्री एस.एस.कोठारी; लोकायुक्त जयपुर (राज.), डॉ. सत्यपाल सिंह, केन्द्रीय मानव संसाधन राज्य मंत्री; दिल्ली, ठाकुर विक्रम सिंह; अध्यक्ष- राष्ट्र निर्माण पार्टी, नई दिल्ली, श्री विद्यामित्र ठुकराल; नई दिल्ली, श्री रासासिंह रावत; अजमेर, श्री सुरेश चन्द्र आर्य; अहमदाबाद, श्री विजय सिंह भाटी; जोधपुर, श्री सत्यव्रत सामवेदी; जयपुर, श्री आनन्द कुमार आर्य; टाण्डा, श्री विनय आर्य; दिल्ली, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश; जोधपुर, आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय; दिल्ली, डॉ. सोमदेव शास्त्री; मुम्बई, आचार्य वेदप्रिय शास्त्री; केलवाड़ा, डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री; अमेठी, डॉ. देव शर्मा; दिल्ली, श्री जीववर्द्धन शास्त्री; बांसवाड़ा, श्रीमती गायत्री पंवार; जयपुर, श्री दीनदयाल गुप्त; कोलकाता, श्री विजय शर्मा; भीलवाड़ा, श्री मोती लाल आर्य; आबू रोड़, बाबू मिठाई लाल सिंह; मुम्बई, श्री जयदेव आर्य; राजकोट, श्री भरत ओमप्रकाश; अहमदाबाद, श्री अरुण अब्रोल; मुम्बई, डॉ. कैलाश कर्मठ; कोलकाता, श्री अमरसिंह; ब्यावर, श्री केशवदेव शर्मा; सुमेरपुर।

अन्य अनेक गणमान्यजनों/विदुषियों की स्वीकृति आनी बाकी है

स्नेह निमन्त्रण

निवेदक

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
फोन- 0294-2417694, 07229948860, 09314235101, 09829063110, 09314535379
Website- www.satyarthprakashnyas.org
E-mail : satyarthnyas1@gmail.com, satyarthsandesh@gmail.com

ओ३म्

वेद सुधा

जीवन लक्ष्य की प्राप्ति में आत्मज्ञान की आवश्यकता

इस संसार में मानव जीवन सर्वश्रेष्ठ है। मानव जीवन का चरम लक्ष्य अत्यन्त दु:खों से छुटकारा पाना, आत्मज्ञान प्राप्त करना, प्रभु की निकटता प्राप्त करते हुए 'मोक्ष' प्राप्त करना है। उपनिषद् का सन्देश है- **'न चेद् इह अवेदीन महती विनष्टि:'** अर्थात् यदि इस इंसान ने मानव जीवन पाकर भी अपने को, आत्मा को और परमात्मा को नहीं जाना, तो निश्चय ही बड़ी हानि है। इसलिए लक्ष्य प्राप्ति में आत्म-ज्ञान की महती आवश्यकता है।

वर्तमान में इन्सान को धन से और शरीर से अधिक प्यार है। आत्मा से प्यार नहीं। आज के युग में इंसान अपने मुख्य लक्ष्य से भटक गया है। सांसारिक चमक-दमक में भटक रहा है। आज के इंसान की अधिकतर भाग-दौड़ धन के लिए है, शरीर के लिए है, आत्म-ज्ञान के लिए नहीं। जबकि यह सत्यता है कि आत्मा के संयोग से ही शरीर में चेतनता व पवित्रता है। इसके न रहने पर शरीर में बदबू व विकृति आने लगती है। शरीर का चेतन-तत्व निकल जाने के कारण शरीर 'जड़' हो जाता है। 'मृत' बन जाता है।

शरीर में आत्मा ही मुख्य तत्त्व है- आत्मा ही शरीर को गति देता है। इस आत्मतत्व की शक्ति सभी को माननी पड़ती है क्योंकि शरीर का आधार आत्मा ही है। आत्मा से ही जीवन का महत्व, आकर्षण और विशेषता है। वेदों में आत्मा का अनेक प्रकार से वर्णन है-

परीत्य भूतानि परीत्य लोकान् परीत्य सर्वा: प्रदिशो दिशश्च।
उपस्थाय प्रथमजामृतस्यात्मनात्मानमभि सं विवेश।। - यजुर्वेद अ. ३२, मन्त्र ११

अर्थात् (भूतानि परीत्य) यह जीवात्मा अनेक योनियों में घूमने वाला है। (लोकान्-परीत्य) नाना लोकों में विचरण करता है। (सर्वा: दिश: प्रदिशश्च परीत्य) सब दिशाओं, प्रदिशाओं में घूमता है (ऋतस्य प्रथमजाम् अमृतस्य उपस्थाय) सत्यस्वरूप वेदवाणी की अमृतरूपी ज्ञान की किरण को प्राप्त करके (आत्मनात्मानमभि सं विवेश) यह पवित्रात्मा परमात्मा का साक्षात्कार कर लेता है। न जाने कब से जीव अपने प्यारे प्रभु से अलग हुआ है और अनेक योनियों में अनेक बार जन्म धारण किया है। परमात्मा ने इस आत्मा को अनेक बार पापरूप कुकर्मों के कारण पापयोनियों, दु:खों, कष्टों एवं अनेक प्रकार के रोगों में डालकर दण्ड भी दिया है फिर भी सुधर नहीं सका। आद्य शंकराचार्य जी का यह कथन सत्य है-

पुनरपि जननं पुनरपि मरणम्, पुनरपि जननी-जठरे शयनम्।।

अर्थात् बार बार जन्म लेना, पुन: मृत्यु को प्राप्त होना, फिर आना, फिर घर-गृहस्थी बसाना, फिर चले जाना, यही क्रम अनेक जन्मों से चल रहा है। जब तक यह मनुष्य आत्मज्ञान प्राप्त नहीं कर लेगा तब तक मृत्यु के चक्र और भटकन से छूट नहीं पायेगा। इसलिए उपनिषद् पुकार कर कह रही है- **'आत्मानं विद्धि'** जीवन-लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आत्म ज्ञान प्राप्त करो। तभी उद्धार होगा। आत्मा को जानो। आत्मबोध करके ही परमात्मा का बोध होगा। बिना अपने स्वरूप को जाने, परमात्मा तक नहीं पहुँचा जा सकता।

जीवात्मा का स्वरूप कैसा है?

न्यायदर्शन के रचनाकार महर्षि गौतम के अनुसार 'जीवात्मा' की सुन्दर पहचान दी गई है-

इच्छाद्वेष प्रयत्न सुख दु:ख ज्ञानान्यात्मनो लिंगम्'। - न्याय दर्शन १/१०

अर्थात् आत्मा उसे जानना चाहिये जहाँ इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दु:ख और ज्ञान-प्राप्त करने की लालसा हो। मनुष्य का शरीर तो जड़ है किन्तु आत्मा चेतन है।

(**आत्मनो लिंगम्**) इस सूत्र में ऋषि ने आत्मा की छ: पहचान बतलायी हैं।

१. इच्छा- यह जीवात्मा नाना प्रकार की इच्छायें प्रकट करता रहता है। इच्छायें रखना कोई बुरी बात नहीं है। इच्छायें शुभ होनी

चाहिए। जैसे- मानव-जीवन 'मोक्ष' प्राप्त करने के लिए मिला है। दुःखों से छुटकारा मिले। महात्मा भर्तृहरि जी के अनुसार अधिक 'तृष्णा' नहीं होनी चाहिए। अधिक तृष्णा में लोभ-लालच आ जाता है। 'तृष्णा न जीर्णा वयमेव जीर्णा' तृष्णायें कभी समाप्त नहीं होतीं। तृष्णा, लोभ, लालच मनुष्य को कमजोर बना देते हैं। मानव अधिक इच्छायें पालने से अपने मुख्य लक्ष्य से भटक जाता है। पापी बन जाता है। पतन की ओर गति करने लगता है। अपने जीवन लक्ष्य को भूल जाता है।

> **"सच्चे ज्ञान के बिना मानव अधर्म, पाप, गुरुड़म, प्रदर्शन, ढ़ोंग एवं पाखण्ड में फंसता चला जाता है।"**

२. द्वेष- जीवात्मा की दूसरी पहचान है- वह अपने से अधिक गुणवान्, धनवान्, ज्ञानी, बलवान् व्यक्तियों से ईर्ष्या, द्वेष करता है। ईर्ष्यालु होना, द्वेष करना अच्छी बात नहीं है। पशु-पक्षी भी इस द्वेष के कारण लड़ते-झगड़ते देखे गये हैं। यह जीवात्मा की बहुत बड़ी दुर्बलता है। कमजोरी है। भगवान हमें द्वेष से, ईर्ष्या से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं-

सहृदयं सांमनस्यमविद्वेषं कृणोमि वः।
अन्यो अन्यमभि हर्यत वत्सं जातमिवाघ्न्या।। - अथर्ववेद काण्ड/३ अनुवाक/३० मन्त्र/१

भगवान अथर्ववेद के माध्यम से हमें आपस में प्रेमपूर्वक रहने का उपदेश करते हैं। ईर्ष्या-द्वेष लक्ष्य प्राप्ति में बाधक हैं।

३. आत्मा की तीसरी पहचान है कि यह जीवात्मा नाना प्रकार के पुरुषार्थ करके, योग-मार्ग का पथिक बनता है। 'मोक्ष' प्राप्ति के लिए पुरुषार्थ करता है। भक्ति के मार्ग को अपनाता है। कर्मशील बनता है। अपने कर्तव्य-कर्मों से लक्ष्य प्राप्ति की ओर आगे बढ़ता रहता है। आलस्य, प्रमाद जैसे अवगुणों का त्याग करता है, तब कहीं जाकर उसका प्रयत्न सफल होता है।

४. सुख- जीवात्मा की चौथी पहचान है कि वह अपने जीवन को सुखी, शान्तिमय, आनन्दमय बनाने का प्रयास करता है। मनुष्य का जीवन सुखी होना भी चाहिए। वेदों में अनेकों मंत्रों में सुखी जीवन के लिए प्रार्थना की गई है।

५. दुःख- आत्मा की पाँचवीं पहचान है- दुःखों का अनुभव करना। कभी व्यक्ति अनेक प्रकार से बीमार पड़ जाता है, कभी अभावग्रस्त होता है। कभी किसी के अत्याचार का शिकार होता है। कभी गरीबी की मार झेलता है। कभी बुढ़ापा आ जाता है। कभी जन्म लेता है और कभी मृत्यु रूपी दुःख प्राप्त करता है। इसीलिए गुरुनानक देव जी कहते हैं-'नानक दुखिया सब संसार' यह संसार दुःखों से, कष्टों से भरा पड़ा है। अत्यन्त दुःखों से छुटकारा प्राप्त करना ही मानव जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य है।

६. ज्ञानानि आत्मनो लिंगम्- आत्मा की छठी पहचान है ज्ञानी बनना। ज्ञान आत्मा का नेत्र कहलाता है। अज्ञान के कारण आत्मा मोह-ममता में बंधकर जन्म-मरण के चक्कर में दुःख भोगता है। विद्वान् लोग कहते हैं कि- **'ऋते ज्ञानात् न मुक्तिः'** बिना सत्य ज्ञान के व्यक्ति दुःखों से, कष्टों से, समस्याओं से, उलझनों से, बन्धनों से नहीं छूट सकता है। सत्य-ज्ञान ही आत्मा को परमात्मा के नजदीक ले जाता है। सच्चे ज्ञान के बिना मानव अधर्म, पाप, गुरुड़म, प्रदर्शन, ढ़ोंग एवं पाखण्ड में फंसता चला जाता है। सत्य ज्ञान ही मनुष्य को जीवन लक्ष्य एवं सन्मार्ग दिखाता है।

आत्म-ज्ञान से ही सब कुछ जाना जाता है-

बृहदारण्यक उपनिषद् में महर्षि याज्ञवल्क्य द्वारा मैत्रेयी को आत्मा के दर्शन, मनन तथा चिन्तन का सुन्दर उपदेश दिया है-

आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेयि!
आत्मनो वा अरे दर्शनेन श्रवणेन मत्या विज्ञानेनेदं सर्वं विदितम्।। - बृहदारण्यकोपनिषद् २/४/५

अर्थात्- अरे मैत्रेयी! मनुष्य को अपने पूरे पुरुषार्थ के साथ आत्मा का साक्षात्कार करना चाहिये। उसके विषय में ही श्रवण, मनन और चिन्तन करना चाहिए क्योंकि आत्म-ज्ञान के द्वारा ही मनुष्य सब कुछ जान सकता है। अतः आत्मज्ञान परमावश्यक है- बिना आत्म ज्ञान के यह जीवात्मा जीवन-लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है।

- आचार्य भगवानदेव वेदालंकार
विकासनगर, नई दिल्ली

महामण्डलेश्वर या ....

पाठक सोच रहे होंगे कि यह शीर्षक अधूरा क्यों रखा गया है? जी हाँ मैं इसके लिए क्षमा प्रार्थी हूँ क्योंकि यह आलेख एक ऐसे व्यक्ति के बारे में है जिसे साधुओं के संगठन के द्वारा महामण्डलेश्वर के पद से नवाजा गया है परन्तु उसने ऐसे अनाचारों को, कुकृत्यों को कारित किया है कि उसके लिए सम्बोधन के क्रम में ऐसे-ऐसे नाम मस्तिष्क में आ रहे हैं जिन्हें लिखना शिष्टता की सीमा से परे होगा। अतः खाली स्थान रखकर काम चला लेना ही उपयुक्त समझ आया। जी हाँ! मैं बाबा बने धूर्तों की शृंखला में नवीनतम नाम 'बाबा दाती मदन' के बारे में बात कर रहा हूँ। टी. वी. पर दिखने वाले बाबाओं में संभवतः यह सबसे आगे हैं और पोक्सो लगाने के बाद, उच्च्य न्यायालय की फटकार के बाद भी अपने को गिरफ्तारी से लम्बे समय तक बचाने में भी यह अग्रणी रहा, शायद शनि जैसे क्रूर ग्रह को अपनी जेब में रखने का दावा वाले इस बाबा को गिरफ्तार करने से अधिकारी भी डर रहे हों कि यह कहीं शनि को उनके ऊपर ही नहीं चढा दे, जबकि नाबालिग पीड़िता के बयान स्पष्ट हैं तथा इनके पाली वाले आश्रम जिसका नाम मासूमों को धोखा देने के लिए आश्वासन आश्रम रखा गया है, की जब राजस्थान महिला आयोग द्वारा जाँच की गयी तो वहाँ भारी अनियमितताएँ पायीं गयीं हैं। जो भी हो पाप का घड़ा भरने पर यह मदन नाम के तथाकथित बाबा शनि से अपनी दोस्ती के कितने भी दावे कर लाखों लोगों को लूट चुके हों, लगता नहीं कि इस बार शनि इन्हें बचा पायेगा।

इस बाबा को संतों की परिषद् ने महामण्डलेश्वर की उपाधि प्रदान की है। अखाड़े में महामण्डलेश्वर का पद सबसे बड़ा होता है अतः जो साधु चरित्र और विद्वता दोनों की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ हो उसे ही महामण्डलेश्वर बनाया जाता है। फिर ऐसी सोच और आचरण वाला व्यक्ति महामण्डलेश्वर कैसे बन सका यह आश्चर्य की बात है। पर जब नित्यानन्द को यह उपाधि मिल सकती थी तो फिर मदन दाती को क्यों नहीं। अगस्त २०१५ में नोएडा के एक शराब कारोबारी सचिन दत्ता को निरंजनी अखाड़े का २१वाँ महामण्डलेश्वर घोषित कर दिया गया और नाम रखा गया सच्चिदानन्द गिरी। जब सचिन के कारनामे का खुलासा हुआ, तो महामण्डलेश्वर का पद छीन लिया गया।

प्रतीत यही होता है कि जिस प्रकार अन्य संस्थाओं का नैतिक पतन हुआ है, महामण्डलेश्वर का पद देने वाली संतों की परिषद् भी इससे बच नहीं सकी है। लोग बताते हैं कि आजकल लाखों करोड़ों खर्च करने वाले व्यक्ति को यह उपाधि मिलने का अवसर मिल सकता है। २०१० में जब हरिद्वार में महाकुम्भ लगा तो श्री पंचायती महानिर्वाणी अखाड़े ने दाती महराज को महामण्डलेश्वर की उपाधि दी थी। उसके बाद से ही दाती महाराज हो गए 'श्री सिद्ध शक्ति पीठ शनिधाम पीठाधीश्वर श्री श्री १००८ महामण्डलेश्वर परमहंस दाती जी महाराज'। इस नाम को छोटा करें तो वो लिखते हैं परमहंस दाती जी महाराज। महामण्डलेश्वर की उपाधि मिलने के बाद दाती जी महाराज महानिर्वाणी अखाड़े के मंचों पर जाने लगे और साथ ही देश में होने वाली धर्म संसदों में भी शामिल होने लगे।

वर्तमान में संतसमाज में १३ अखाड़े हैं। आज अखाड़ों के लिए महामण्डलेश्वर धनकुबेर भी साबित होते हैं। शायद यही वजह है कि लगभग सभी अखाड़ों में महामण्डलेश्वरों की संख्या बढ़ती जा रही है। अखाड़ों से जुड़े लोगों की मानें तो संन्यासी सम्प्रदाय से जुड़े अखाड़ों में महामण्डलेश्वर पद के लिए ७५ लाख से एक करोड़ रुपये तक खर्च किए जाते हैं। वहीं वैष्णव सम्प्रदाय से जुड़े अखाड़ों में महामण्डलेश्वर बनने के लिए ४० से ५० लाख रुपये खर्च करने पड़ते हैं। अखाड़ा जितना बड़ा, रकम भी उतनी ही बड़ी होती है। सचिन के महामण्डलेश्वर बनने में भी दो करोड़ रुपये खर्च करने की बात सामने आई थी।

२००१ तक उदासीन और संन्यासी अखाड़ों में लगभग २०० महामण्डलेश्वर थे। २०१३ के प्रयाग अर्धकुम्भ में इनकी संख्या ३०० से अधिक हो गई थी। २००१ में वैष्णव सम्प्रदाय के अखाड़ों में महामण्डलेश्वरों की संख्या ४०० से अधिक थी, जो २०१३ तक बढ़कर ७०० से अधिक पहुँच गई थी। महामण्डलेश्वरों की बढ़ती संख्या इसमें धन की भूमिका की ओर संकेत करती है।

१० सितम्बर २०१७ को अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद् ने १४ बाबाओं की लिस्ट जारी कर उन्हें फर्जी करार दिया है। इसी बैठक में संत और महामण्डलेश्वर बनाने की नई प्रक्रिया भी तय की गई है। परिषद् ने तय किया है कि किसी को संत की उपाधि देने से पहले उसकी पूरी पड़ताल की जाएगी। उपाधि देने से पहले परिषद् यह भी देखेगी कि व्यक्ति की जीवनशैली किस तरह की है। ये भी देखा जाएगा कि संत के पास नकदी या उसके नाम पर कोई संपत्ति तो नहीं है। अगर किसी के पास संपत्ति है, तो पहले उसे न्यास को दान करना होगा और लोगों के कल्याण के लिए इस्तेमाल करना होगा। पर उक्त १४ जनों की सूची में दाती मदन का नाम नहीं है, इससे जाहिर है कि अपनी साख बचाने को चिन्तित संत समाज को गंभीरता व निर्लोभता अपनानी होगी वरना जिस प्रकार कुकर्मी बाबाओं की संख्या बढ़ती जा रही है लोग प्रत्येक बाबा को सन्देह की दृष्टि से देखेंगे वह दिन दूर नही है।

ज्यादातर ऐसे आध्यात्म रहित व्यापारी धर्मगुरुओं का उदय जिस प्रकार होता है मदन दाती की कहानी उनसे भिन्न नहीं है। दाती महाराज का जन्म १० जुलाई १९५० को राजस्थान के पाली जिले के अलवस गाँव में हुआ था। दाती महाराज का नाम उस समय मदन था। उनका परिवार ढोलक बजाकर अपना पेट पालता था और मदन के पिता देवाराम भी ढोलक बजाने का काम ही करते थे। जन्म के ३ महीने बाद ही मदन की माँ की मौत हो गई। बच्चों की जिम्मेदारी भी अब पिता पर ही थी। लेकिन कुछ साल बाद ही मदन के पिता देवाराम की भी मौत हो गई। इसके बाद मदन गाँव के एक शख्स के साथ दिल्ली आ गया और चाय की दुकान में काम करने लगा। इसके बाद केटरिंग का कार्य किया। इसी समय 'हल्द' लगे न फिटकरी रंग चोखा आय' की कहावत को सिद्ध करने वाले उपक्रम से ये दो-चार हुए। एक ज्योतिषी से इनका सम्पर्क हुआ, उससे तथाकथित रूप से ज्योतिष सीखी और बन गए ज्योतिषाचार्य। कांग्रेस के एक नेता सम्पर्क में आये भविष्यवाणी के अनुसार दिल्ली का चुनाव जीत गए। उन्होंने खुश होकर दाती महाराज को फतेहपुर बेरी में स्थित अपना पुश्तैनी मन्दिर दान कर दिया। फिर दाती महाराज ने अपने रसूख और दबंगई से मन्दिर के आस-पास की जमीनें भी कब्जा लीं और शनिधाम मन्दिर की स्थापना की।

राजस्थान में अपना गाँव छोड़कर दिल्ली आए दाती महाराज की किस्मत शनिधाम मन्दिर की स्थापना के साथ ही चमकने लगी। कई टी.वी. चैनलों पर दाती महाराज का ज्योतिष प्रोग्राम चलने लगा, जिसके बाद उसकी पहचान कई बड़े नेताओं और कारोबारियों से हुई। दाती महाराज ने तीन दशक पहले जिस शनिधाम मन्दिर की स्थापना की, वह आज साउथ दिल्ली के पाश इलाके छतरपुर में पड़ता है। शनिधाम मन्दिर से ही सटा दाती महाराज का एक फार्म हाउस भी है। फतेहपुर बेरी में स्थित दाती महाराज का यह आश्रम ७ एकड़ लम्बी-चौड़ी जमीन पर फैला हुआ है।

दाती महाराज ने बाद में राजस्थान के अपने होमटॉउन पाली में भी लावारिस बच्चों के लिए एक आश्रम बना डाला। दाती महाराज के इस चिल्ड्रन होम को कई जगहों से फंड मिलता है। साथ ही दाती महाराज ने एक स्कूल भी खोल रखा है, जिसमें

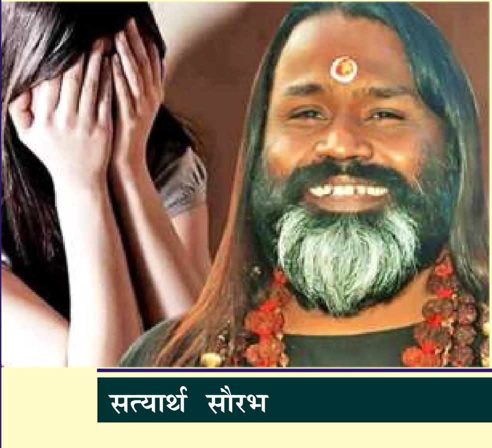

तकरीबन १००० बच्चे पढ़ते हैं। इस स्कूल के साथ में हॉस्टल भी है और एक बड़ी गोशाला भी। राजस्थान महिला आयोग ने पाली स्थित इस हॉस्टल की पड़ताल की है और अनेक अनियमितताएँ पायीं हैं, पर अभी जिस मामले में दाती घिरा है वह अत्यन्त गंभीर है। आरोप है कि ९ जनवरी २०१६ के दिन दाती ने सभी मर्यादाओं को तार-तार करते हुए एक बच्ची को अपनी हवस के फंदे में दबोच लिया था।

पीड़िता के वकील प्रदीप तिवारी के अनुसार पीड़िता को उसके पिता ने १० साल पहले दाती के पाली वाले बालाग्राम गुरुकुल आश्रम भेजा था। दाती ने उसे देखा तो उसके सिर पर शैतान सवार हो गया, उसे पाली से दिल्ली के छतरपुर आश्रम

बुलाया। आरोपों के मुताबिक वहीं उसने पहली बार उसे रौंदा। आरोप इतने संगीन हैं कि दाती से घिन आने लगती है। पीड़िता ने मजिस्ट्रेट के सामने बयान दिया है कि बाद में उसके दो शिष्यों ने भी दिल्ली आश्रम में कई बार दुष्कर्म किया था। तीनों ने राजस्थान आश्रम में भी उसकी गरीबी और आस्था का फायदा उठाया और धमकी दी कि अगर जुबान खोली तो सीधे मौत। दो साल तक लड़की सदमे में जीती रही। लेकिन एक दिन उसने परिवार को अपनी कहानी बताई तो धर्म के लबादे में एक लिजलिजा आदमी शनिधाम में खड़ा था। हमें विश्वास है कि दाती को अपने कुकर्म की सजा अवश्य मिलेगी।

पर बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। हम प्रत्येक बार इस प्रकार के आलेखों में यह प्रश्न उठाते हैं कि आखिर क्या कारण है शास्त्रीय अथवा अन्य प्रकार की योग्यता से रहित व्यक्ति समाज में ऐसा स्तर प्राप्त कर लेते हैं कि न सिर्फ वे कुकर्म करने का अवसर पा जाते हैं, धन-बल, जन-बल और समर्थन-बल जुटा लेते हैं कि उनके विरुद्ध नियमानुसार कार्यवाही करने पर उनके समर्थन में मदहोश जन अपना सब कुछ दांव पर लगा देते हैं। आसाराम जब पुलिस वेन से उतर कर अदालत जाता था तो उसके समर्थक उस रास्ते पर माथा रगड़ते थे कि उस जगह की मिट्टी को उनके भगवान के चरणों ने स्पर्श किया है। जब तक एक प्रबल वैचारिक क्रान्ति के प्रवाह में चमत्कार को नमस्कार करने तथा बिना पुरुषार्थ और योग्यता के सब कुछ पाने की प्रवृत्ति और ऐसा कुछ खास लोगों के माध्यम से सम्भव है यह विश्वास करने की मानसिकता को निःशेष नही किया जाएगा तब तक ऐसे बाबा जन्मते ही रहेंगे। दाती तो उन बाबाओं की श्रेणी में शामिल हो गया जिसने शारीरिक शोषण कर कानून की गिरफ्त को आमंत्रित कर लिया वरना बौद्धिक शोषण करने बाले कदम-कदम पर बिखरे पड़े है। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब हरिद्वार में कदम-कदम पर ऐसे शोषणकर्त्ताओं को फैले देखा तभी तो हुंकार कर पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़ी थी और सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थ का प्रतिदान मानवता को दिया था अतः यह जिम्मेदारी आज भी आर्यसमाज की है पर आर्य समाज इसे गंभीरता से नहीं ले रहा जबकि आज के परिपेक्ष्य में यही उसका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य है।

सांसारिक लोगों की ऐसी ही सामान्य मनोवृत्तियों और अपेक्षाओं को जानते हुए कई लोगों ने अंधविश्वास की बड़ी-बड़ी दुकानों को रच दिया। हर अखबार, हर चैनल इनका मददगार है। जब इस प्रकार का कोई बाबा शारीरिक शोषण में फंस जाता है तो फिर मानवता की दुहाई देकर ये अखबार तथा चैनल उसके पीछे पड़ जाते हैं परन्तु क्या कोई एक पल भी यह सोचता है कि चाय बेचने वाला कोई अशिक्षित बालक अरबों के साम्राज्य का स्वामी कैसे बन गया? क्या इसमें उनका कोई योगदान नहीं है? बात कड़वी है पर सच यही है कि उनका सबसे बड़ा योगदान है। शनि के खौफ में जकड़े लोगों (हम कह सकें तो मानसिक रोगियों) को शनि की मित्रता दिलवाने वाला यह दाती कितने चैनलों के माध्यम से अपने झूंठ के जाल में जकड़ता था क्या उनकी गिनती यहाँ की जाय? धन लेकर चैनल पर समय देना गलत नहीं है यह व्यापार है परन्तु उस कार्यक्रम से जनता के बौद्धिक विनाश का सामान दिया जाय और आप खामोश रहें अथवा सहयोगी बनें यह उचित नहीं। याद रखें बौद्धिक विनाश आतंकवाद से भी अधिक खतरनाक है और हर चैनल इसके प्रसारण में सहयोगी बना हुआ है। निर्मल बाबा की 'समोसा थिरेपी' क्या चैनलों के माध्यम से प्रसिद्ध नहीं हुयी थी? धूम्रपान के दृश्य पर आजकल यह चेतावनी लिखी होती है कि 'धूम्रपान जानलेवा है' इसी प्रकार जब शनि-सिद्धि के माध्यम से लोगों को भ्रमित कर एक दाती महाराज के जन्म की भूमिका बन रही हो वहाँ यह क्यों नहीं लिखा जा सकता कि 'मनुष्य के भाग्य का निर्माण उसके कर्मों के आधार पर होता है किसी ग्रह-नक्षत्र की इसमें कोई भूमिका नहीं।' ऐसा लिख देना मात्र भी कर्तव्य पालन की ओर एक कदम और प्रभावशाली कदम होगा। देखें! तर्कशीलता व बौद्धिकता के पहरुए बने कौन से अखबार या चैनल मानवता को यह उपहार देते हैं।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ८००५८०८४८५

मेरी भी सुनो

एक भजन की पंक्तियाँ इस तरह से हैं-

वो तो अन्दर से समझा रहा है हमें,
हम समझना ही ना चाहें तो वो क्या करे।
वो तो कहता है कि आदत बुरी छोड़ दो,
हम बदलना ना चाहें तो वो क्या करे।

मैं आत्मा हूँ। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता उपदेश में समझाया है कि शरीर धारण करने वाले सभी प्राणियों में आत्मा विद्यमान होती है। आत्मा मौजूद तो सभी जीवों में होती है लेकिन अच्छे और बुरे, पाप और पुण्य, अपने और पराये, स्वर्ग और नर्क का एहसास तो केवल मनुष्य ही कर सकते हैं। अन्य जीव, जन्तुओं में आत्मा उन्हें उपर्युक्त किस्म का एहसास कराके सन्मार्ग पर चलने के लिए सतर्क नहीं कर सकती है। ईश्वर 'परमात्मा' है अर्थात् सभी आत्माओं का स्रोत, मार्गदर्शक तथा स्वामी होता है। सभी आत्माएँ अन्ततः परमात्मा का सान्निध्य ही चाहती हैं। श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए कहा है कि आत्मा अजर है, अमर है, हवा उसे सुखा नहीं सकती, पानी उसे गला नहीं सकता। आग उसे जला नहीं सकती। जिस तरह मनुष्य पुराने वस्त्रों को उतार नये वस्त्र धारण करता है, उसी तरह आत्मा पुराने शरीर को छोड़ नये शरीर को धारण करती है लेकिन जब कोई आत्मा मनुष्य के शरीर में प्रवेश करती है केवल तभी ही उसे अच्छे और बुरे की पहचान होती है, केवल तभी ही वह लाख चौरासी के आवागमन के दुष्चक्र से मुक्ति प्राप्त करने का प्रयत्न कर सकता है। मनुष्य वेदादि धार्मिक ग्रन्थों को पढ़कर पाप और पुण्य, बुराई तथा भलाई, अपने तथा पराये के भेद को समझने लगता है। करने योग्य तथा ना करने योग्य कार्यों में भेद समझकर केवल उन्हीं कार्यों को करता है, जो मान, सम्मान बढ़ाने वाले, बुद्धिमता से पूर्ण, सात्विक प्रवृत्ति वाले तन तथा मन को सुख देने वाले, सुख व शान्ति बढ़ाने वाले, ख्याति बढ़ाने वाले, परलोक सुधारने वाले होते हैं।

इस तरह हम सब मनुष्यों में मौजूद आत्मा घोर पापों के घुप्प अन्धेरे में हमें ज्ञान का दीपक जलाकर सही मार्ग ढूँढ़ने में मदद करती है। आत्मा चौराहे की लालबत्ती की तरह हमें रोककर, सोच समझकर आगे चलने की सलाह देती है। दुःख, मुसीबतों, समस्याओं, जटिलताओं से परिपूर्ण, जीवन

रूपी इस समुद्र में आत्मा 'लाईट-हाउस' 'light House' की तरह चेतावनी देते हुये सुरक्षित यात्रा करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

मेरी आवाज सुनो। मैं तुम्हारी आत्मा हूँ। दुनिया में आज जो लड़ाई, झगड़े, दंगे, महिलाओं/बच्चों के शोषण/यौन शोषण हो रहे हैं, मजदूरों से ज्यादा काम कराके कम वेतन देने की वारदातें हो रही हैं, जंगल की आग की तरह आतंकवाद की वारदातें बढ़ रही हैं, उसका कारण मेरी अवहेलना है आज बाप-बेटा, भाई-भाई, भाई-बहन, पति-पत्नी, मित्र-मित्र में आपसी अविश्वास की खाई चौड़ी हो रही है। इंसानियत नाम की चीज देखने को नहीं मिलती, अधिकांश लोगों में कामचोरी, बेईमानी, हरामखोरी, निन्दा-चुगली, दूषित मानसिकता, ईर्ष्या, घृणा, अहंकार आदि बढ़ रहे हैं। मैं, आत्मा सभी को समझाने की कोशिश तो करती हूँ कि आप यह सब गलत कर रहे हो, यह घोर पाप है, नर्क के रास्ते ले

जाने वाला है, लेकिन लोग जवानी, सुन्दरता, बल, धन, हैसियत या फिर अज्ञानता के नशे में चूर होकर बड़े छोटे का लिहाज भूल जाते हैं, कृतघ्नता वाला व्यवहार करते हैं। नमकहराम बन जाते हैं, जन्म देने वाले अपने माँ-बाप की सेवा करके कर्ज उतारना तो दूर उन्हें सताते हैं, मारपीट करते हैं, उनकी धन-सम्पत्ति पर कब्जा कर घर से निकाल देते हैं। तभी तो बड़े होकर उनके बच्चे उनके साथ वही दुर्व्यवहार करते हैं, जो कुछ उन्होंने अपने माँ-बाप तथा दूसरों के साथ हेराफरी का व्यवहार किया था। आज साधु शैतान हो गया है, बुजुर्गों में वह बात नहीं। हम जब यात्रा कर रहे होते हैं, तो रास्ते में दुर्घटनाग्रस्त लोग सहायता के लिए चीख-पुकार कर रहे होते हैं, हम सब कुछ देखकर भी अनसुना कर आगे बढ़ जाते हैं। सड़क पर कुछ बदमाश सरेआम किसी लड़की के साथ दुर्व्यवहार कर रहे होते हैं, कई बार कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को सजा देने के नाम पर निर्वस्त्र घुमाया जाता है, हम द्रोपदी के चीर-हरण का तमाशा बेबस दरबारियों की तरह देखते रहते हैं। अब भी वक्त है, मेरी (आत्मा की) आवाज सुनो। मैं संवेदनशीलता हूँ। मैं सच्ची मित्र, सहायक, मार्गदर्शक हूँ। मैं तुम्हारा संयम, बहादुरी, कतर्व्यपरायणता, ईमानदारी हूँ, सत्य हूँ। परमात्मा की कृपा से प्रकाशित हूँ जो तुम सब में विद्यमान है। मेरी आवाज सुनो। मैं तुम्हें बुरे कामों से बचाने लिये चेतावनी देती रहती हूँ। करने योग्य काम करने के लिए समझाती रहती हूँ। देशभक्ति तथा कर्तव्यपरायणता का पाठ पढ़ाती रहती हूँ। संभलो, उठो, मेरा दामन थामो, सब ठीक हो जाएगा। मैं तुम्हें पाप कर्मों के प्रति तुम्हारी प्रवृत्ति को समाप्त कर दुष्परिणामों से बचा सकती हूँ।

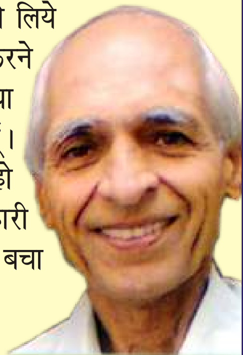

- प्रो. शामलाल कोशल
मकान नं-९७५, बी/२०
ग्रीन रोड़, रोहतक-१२४००१ (हरि.)

पूरा नाम-
चलभाष-

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/१८

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (सप्तम समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	१	न १	■	२	व २	■	३ आ	३	■
४	ण ४	■	५	गु ५	५	■	६ नि	६	६
■	७	क्ष ७	७	■	८	रा ८		र ८	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. प्राण को बाहर से भीतर लेना क्या कहाता है?
२. हर्ष-शोकादि किसके गुण हैं?
३. किसके देह में रहने तक सुख-दुःख, इच्छा, प्रयत्नादि गुण शरीर में रहते हैं?
४. जीव और परमात्मा का विज्ञान किसके द्वारा होता है?
५. जो गुणों से सहित हो वह क्या कहाता है?
६. जड़ के रूपादि तथा जीव के द्वेषादि गुणों से पृथक् होने से परमात्मा क्या कहलाता है?
७. ईश्वर में इच्छा नहीं परन्तु क्या होता है?
८. परमेश्वर निराकार है वा साकार?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/१८ का सही उत्तर

१. नित्य २. परमेश्वर ३. व्याप्य व्यापक
४. परिच्छिन्न ५. इच्छा ६. अपान ७. जीवात्मा

"विस्तृत नियम पृष्ठ २० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ सितम्बर २०१८

विश्व की सर्वश्रेष्ठ शिक्षा पद्धति गुरुकुल प्रणाली है

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति एक पूर्ण शिक्षा व्यवस्था है, गुरुकुल शिक्षा पद्धति से अगर शिक्षा दी जाती है तो २४ वर्ष में ही शिक्षित युवा तैयार हो जाता है। प्राचीन युग में प्रत्येक गाँव में गुरुकुल हुआ करते थे, उसमें स्थानीय भाषा या संस्कृत में शिक्षा दी जाती थी। अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा प्रणाली को ध्वस्त कर अपने स्वार्थ के लिये अपनी अविकसित शिक्षा पद्धति लागू कर दी और यह कहते हैं कि भारतीयों के पास कोई शिक्षा पद्धति नहीं थी, अंग्रेजों के कारण ही भारतवासी शिक्षित हुए हैं। इसके विपरीत अंग्रेजों ने हमारी विकसित शिक्षा व्यवस्था को ध्वस्त कर अपनी प्रणाली लागू की।

सन् १९३१ ई. में गोलमेज सम्मेलन में महात्मा गाँधी लंदन गये थे। उस समय अंग्रेज अधिकारियों ने गाँधी जी से कहा था- यदि अंग्रेज भारत नहीं आते तो भारत की शिक्षा व्यवस्था बन नहीं पाती। गाँधीजी को यह बात सही नहीं लगी लेकिन उनके पास ऐसे तथ्य नहीं थे कि वे उसका जवाब देते। भारत आने पर उस समय के विख्यात इतिहासकार धर्मपाल जी से कहा था कि तुम भारत की शिक्षा व्यवस्था के बारे में प्रमाण एकत्रित करो और उसके आधार पर बताओ कि भारत की शिक्षा व्यवस्था अंग्रेजों के आने के पूर्व कैसी थी।

गाँधी जी के कहने पर इतिहासकार धर्मपाल जी लंदन, फ्रान्स और जर्मनी आदि देशों और भारत में प्राचीन इतिहास की खोज करने में संलग्न हो गये और वे ४० वर्ष तक अध्ययन और अध्यापन करते रहे तथा अनेक दस्तावेज एकत्रित किये, उसका उन्होंने पूर्ण विश्लेषण किया और यह सिद्ध कर दिखाया कि- अंग्रेजों के आने से पूर्व भारत की शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही श्रेष्ठ थी। भारत के प्रत्येक परिवार में शत प्रतिशत साक्षरता थी और भारतीय जन अपने बच्चों को शिक्षित करने में अपना तन-मन-धन खर्च करते थे।

विलियम एडम मैकाले के गुरु थे, मैकाले भारत की शिक्षा पद्धति के विषय में जो खोज करते थे, उसे वे अपने गुरु विलियम एडम के पास भेजते थे। उसे आधार बनाकर विलिम एडम ने भारत की शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर १७८० पृष्ठों की रिपोर्ट तैयार की उस रिपोर्ट को ब्रिटिश संसद में पेश किया गया। २ फरवरी सन् १८३५ को ब्रिटिश पार्लियामेन्ट में मैकाले ने भारतीय शिक्षा पद्धति और व्यवस्था पर भाषण दिया और सांसदों ने उनसे प्रश्न भी किये। उनका उत्तर भी मैकाले द्वारा दिया गया। ये सभी रिकार्ड रूप में अभी तक सुरक्षित है। मैकाले ने कहा था-

१. मैंने पूरा भारत देखा, लेकिन भारत देश में किसी भी स्थान पर भिखारी देखने को नहीं मिला, भारत इतना समृद्ध है।

२. सूरत शहर में जितनी सम्पत्ति है, उतनी यूरोप में सभी शहरों की सम्पत्ति भी नहीं है अर्थात् भारत का शहरी इलाका व्यापार धंधों में इतना समृद्ध था कि यहाँ किसी प्रकार की बेरोजगारी नहीं थी।

३. भारत में जितना भी धन वैभव सम्पत्ति है, वह भारत की शिक्षा व्यवस्था के कारण है। जिसका तात्पर्य है शिक्षा रोजगार परक और योग्यता पर आधारित होने के कारण यह समृद्धि थी।

४. भारत में लगभग शत प्रतिशत साक्षरता है। दक्षिण भारत में साक्षरता १०० प्रतिशत है। दक्षिण भारत अर्थात् कर्नाटक, तैलंगाना, तमिलनाडु शत प्रतिशत, उत्तर भारत में लगभग ८२ प्रतिशत, मध्यभारत में ८७ प्रतिशत साक्षरता है। मैं कह सकता हूँ सम्पूर्ण भारत साक्षर है अर्थात् यहाँ पर कोई अनपढ़ नहीं।

५. भारत में ७ लाख ३२ हजार गाँव हैं जहाँ से रेवेन्यू प्राप्त होता है और कोई भी गाँव ऐसा नहीं है जहाँ गुरुकुल या स्कूल न हो। यहाँ स्कूलों को गुरुकुल कहा जाता है। इससे

यह सिद्ध होता है कि इन गुरुकुलों में पढ़ाने वाले ब्राह्मण विद्वान् और गुरु की योग्यता वाले थे।

६. गुरुकुलों में २०० से २०००० हजार तक छात्र पढ़ते हैं, जिसमें मोनिटोरियम शिक्षण पद्धति है, यही कारण है यहाँ से निकलने वाला छात्र सब विषयों में पारंगत होता था।

७. गुरुकुलों में विद्या और शिक्षा दोनों प्रदान की जाती है। नैतिकता, आध्यात्मिकता, न्याय आदि को सिखाना विद्या है, गणित, रसायन शास्त्र, विज्ञान आदि को सिखाना शिक्षा है। इससे यही लगता है मैकाले ने यहाँ की शिक्षा व्यवस्था का पूर्ण अध्ययन किया था।

८. गुरुकुलों में ८ विषयों गणित, खगोलशास्त्र, धातु विज्ञान, इंजीनियरिंग, संगीत, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र,

भौतिक शास्त्र पढ़ाये जाते हैं। एक विषय पूर्ण होने पर दूसरा विषय पढ़ाया जाता है, इससे यह सिद्ध होता है कि गुरुकुल से निकलने वाला छात्र विद्वान् होकर ही निकलता है।

९. भारत में विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा होती थी। ऐसे गुरुकुलों की संख्या १५८०० सन् १८३५ तक थी।

ब्रिटेन के तत्कालीन शिक्षा मंत्री ने मैक्समूलर की रिपोर्ट के बाद स्वीकार किया कि भारत पूर्ण शिक्षित देश है। भारत में तब ७ लाख ३२ हजार से भी अधिक स्कूल थे इसके विपरीत ब्रिटेन में मात्र २४० स्कूल थे।

गाँवों के गुरुकुलों के साथ ही लड़कियों को पढ़ाने के लिए अलग गुरुकुल थे। सह शिक्षा का चलन नहीं था। लड़कियों के स्कूल में लड़कियाँ, महिलायें ही शिक्षा देती थीं। गुरुकुल भी लड़के-लड़कियों के दूरस्थ रहते थे। जहाँ पर पुरुषों के जाने पर प्रतिबन्ध रहता था और लड़कों के गुरुकुलों में महिलायें प्रतिबन्धित रहती थीं। मैकाले ने ब्रिटिश संसद में कहा था कि भारत को यदि गुलाम बनाना है तो उसकी शिक्षा पद्धति को ध्वस्त किया जावे। इसी आधार पर ब्रिटिश सरकार ने भारतीय शिक्षा अधिनियम द्वारा स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने को गैरकानूनी तथा अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा पद्धति लागू कर दी।

अब हमारा देश स्वतंत्र है और ७० साल हो चुके हैं। फिर भी हम अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा दे रहे हैं। हम भारत की स्थानीय भाषा और संस्कृत में शिक्षा देने के बजाय अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देकर देश में बेरोजगारी में वृद्धि कर रहे हैं। भारतीय शिक्षा व्यवस्था अत्यन्त ही समृद्ध थी और १०० प्रतिशत साक्षरता थी। यह हमारा दुर्भाग्य था कि १०० प्रतिशत साक्षरता देश की थी उसे १७ प्रतिशत साक्षर अंग्रेज ध्वस्त कर चले गये। जब हमारे देश में भारतीय भाषाओं में शिक्षा देने की व्यवस्था थी तब हमारा देश विकसित था और आज हमारा देश शिक्षा के क्षेत्र में पिछड़ कर विकासशील देश की श्रेणी में ही चल रहा है, आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश की जनता पुनः प्राचीन शिक्षा पद्धति की ओर लौटे और अपने स्तर पर ७ लाख ३२ हजार गाँवों में अपने-अपने गुरुकुल चलाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर देश के विकास में अपना योगदान देवे।

- सुखदेव व्यास
अनन्त सुन्दरम् भवन
जहाज गली उज्जैन (म.प्र.)

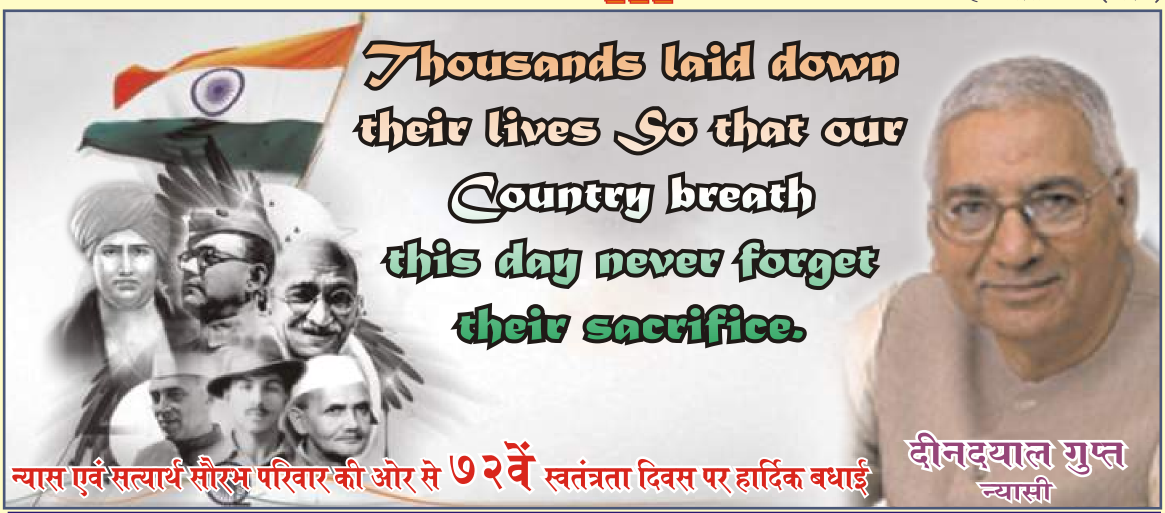

देवनागरी की वैज्ञानिकता

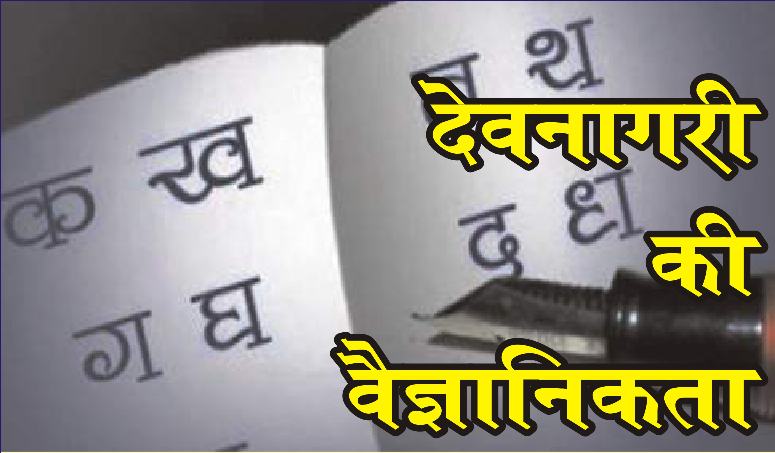

भारत में स्वतंत्रता के बाद अपनी राजभाषा के रूप में देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी भाषा को स्वीकार किया है, जिसमें मुख्यतः संस्कृत की शब्दावली का समावेश होगा। तथापि आज भी ऐसे लोग हैं जो इस संविधान के प्रावधान पर प्रश्नचिह्न उठा रहे हैं और हिन्दी की शब्दावली पर नहीं तो उसकी लिपि देवनागरी में खामियाँ निकाल रहे हैं। स्पष्टतः ये वे लोग हैं जो प्रकारान्तर में ही सही, रोमन लिपि की विशेषता बताने के माध्यम से अंग्रेजीयत को बनाए रखना चाहते हैं। इस क्रम में कई हिन्दी विद्वानों के लेख भी देखने को मिले हैं जो घुमा फिराकर देवनागरी की तुलना में रोमन लिपि को अधिक वैज्ञानिक सिद्ध करना चाहते हैं या यों कहें कि देवनागरी को अवैज्ञानिक बताना चाहते हैं।

इस बिन्दु पर एक तर्क यह दिया जाता है कि हिन्दी की लिपि अक्षरात्मक या अक्षरलिपि है, जबकि अन्य लिपि तथा रोमन वर्णलिपि या वर्णात्मक लिपि हैं। तर्क यह भी दिया जाता है कि वर्णलिपि में जितनी ध्वनियाँ होती हैं उतनी ही लिपियाँ होती हैं, जबकि अक्षरात्मक लिपि में एक लिपि में दो ध्वनियों का समावेश होता है। इसके अतिरिक्त हिन्दी की लिपि में मात्रा का प्रयोग होता है, जो रोमन जैसी लिपियों में नहीं है। इस तरह अक्षरात्मक लिपि वैज्ञानिक नहीं है, अतः हिन्दी के लिए भी रोमन लिपि को स्वीकार किया जाना चाहिए। यह समझना कठिन है कि पूर्वोक्त आधार पर वर्णलिपि वैज्ञानिक कैसे हो गई और अक्षरलिपि अवैज्ञानिक? अधिक से अधिक यह कहा जा सकता है कि वर्णलिपि लिखने में सरल है। लेकिन उसमें अन्य अनेक दोष हैं, जैसे एक ध्वनि के लिए अनेक लिपियों का प्रयोग या एक लिपि में विभिन्न ध्वनियों का उच्चारण होना। स्वयं अंग्रेज विद्वान् यह स्वीकार करते हैं कि रोमन लिपि में उतनी लिपियाँ नहीं हैं जो सम्पूर्ण ध्वनियों का प्रतिनिधित्व कर सकें। एक कथन उल्लेखनीय है- The English Alphabet is obviously defective. We do not have enough symbols to represent all the sound.

- Mr. A.M. Plaieton pink & S.K. Thomas

वास्तव में किसी लिपि का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता और उसकी गुणात्मकता का निर्धारण सम्बन्धित भाषा की ध्वनियों के आधार पर किया जाना चाहिए। यदि सम्बन्धित ध्वनियों का प्रतिनिधित्व सम्बन्धित लिपियाँ कर रही हों या अधिक सीमा तक कर रही हों तो सम्बन्धित लिपियाँ सार्थक मानी जा सकती है। दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है कि यदि लिपियों के लेखन में अपेक्षाकृत सुविधा होती है तो वे लिपियाँ सरल मानी जायेंगी। भले ही समग्र रूप में एक ध्वनि के लिए एक लिपि न हो। पूर्वोक्त आलोचक देवनागरी लिपि में यह दोष निकालते हैं कि वह अक्षरात्मक होने के कारण एक ध्वनि के लिए एक लिपि न होकर अधिकांशतः संयुक्त लिपि होती है, जैसे 'कि' अर्थात् क+इ। यहाँ रोमन लिपि में दो स्वतंत्र लिपियाँ होंगी- K+i। यह गुण कैसे हो गया, यह समझना कठिन है जबकि इसके लिखने में समय अधिक लगता है। यहाँ पर यह भी उल्लेखनीय है कि ऐसे भी व्यक्ति मिल जायेंगे जो बिना लिखना जाने किसी भाषा का स्वतन्त्र या सक्षम प्रयोग कर सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि ध्वनि प्राथमिक है और लिपि उस पर आश्रित। तो मानना यह होगा कि जिस लिपि के माध्यम से सम्बन्धित भाषा की ध्वनियों का अधिकाधिक प्रतिनिधित्व हो सके या यूँ कहें कि सम्बन्धित ध्वनियाँ पूर्ण रूप से प्रतिनिधित्व पा सकती हैं या भ्रम या विसंगति की संभावना न हो, तो यह लिपि अधिक सफल और सार्थक है। यहाँ एक कसौटी यह भी मानी जाती है कि जिस लिपि में किसी भाषा का अनजाना शब्द भी सुनकर शुद्ध रूप में लिखा जा सके वही लिपि अधिक वैज्ञानिक है। उदाहरण के लिए हिन्दी या संस्कृत का कोई नया शब्द जिसे लिपिकर्त्ता ने कभी न सुना हो, वह भी शुद्ध रूप में लिखा जा सकता है, यदि बोलने वाला शुद्ध उच्चारण करता है। किन्तु अंग्रेजी भाषा या रोमन लिपि में यह संगति नहीं हो सकती, उदाहरण के लिए 'ऑफ' (of) शब्द से परिचित लेखक 'कफ' (Cough) शब्द को पहली बार सुनने पर लिपिबद्ध नहीं कर सकता जबकि दानों की 'फ' ध्वनि समान है। कहना यह है कि देवनागरी में एक ध्वनि से परिचय होने पर और सही ढंग से उच्चारण किए जाने पर प्रथम बार सुने गए शब्द में भी ध्वनि लिपिबद्ध की जा सकती है, यह इसकी अपनी विशेषता है। अन्यथा रोमन जैसी लिपियों में अनजाना शब्द पहली बार सुनने पर समान होने पर भी लिपिबद्ध नहीं किया जा सकता

और बोलने वाले को उसकी वर्तनी (Spelling) बतानी पड़ेगी। सुनकर लिखने वाले को लिखने से पहले वक्ता के द्वारा उच्चारित ध्वनियों की लिपियों का ज्ञान होना आवश्यक है, अन्यथा वह शब्दों को सही रूप में लिपिबद्ध नहीं कर सकता। यह एक दुरूह और कठिन समस्या है जो देवनागरी लिपि में नहीं है। इसलिए पतंजलि ने अपने महाभाष्य में कहा है कि शब्द अनन्त हैं और प्रत्येक पद का पाठ करना एक मनुष्य के लिए अपने जीवनभर में सम्भव नहीं है। अतः कुछ सामान्य और कुछ विशेष नियमों के आधार पर भाषा सीखी जा सकती है-

अनभ्युपाय एव शब्दाना प्रतिपत्तौ प्रतिपदपाठः।.....
कथं तर्हीमे शब्दा प्रतिपतव्याः?.....
कशेचिद् उत्सर्गः कर्तव्यः,कश्चिद् अपवादः।

वास्तव में वही लिपि सार्थक है और वैज्ञानिक कही जा सकती है जो सम्बन्धित भाषा की अधिकाधिक ध्वनियों का प्रतिनिधित्व कर सके। अतः यह कहना गलत है कि किसी लिपि पर सम्बन्धित भाषा की संस्कृति और साहित्य का प्रभाव नहीं पड़ता। इसके विपरीत जो भाषा जितनी समृद्ध होगी उसकी लिपि भी उतनी ही समृद्ध होगी। इस बिन्दु पर यह कहने में संकोच नहीं है कि हमारा साहित्य पूर्णतः समृद्ध है। तद्नुसार लिपि भी अधिकाधिक समृद्ध और वैज्ञानिक है। इसके प्रमाण हैं- स्वर एवं व्यंजनों का अधिकाधिक होना, अनुस्वार, विसर्ग, अनुनासिक की पृथक् व्यवस्था होना और लिपियों में मात्रा का अनिवार्य स्थान होना। लिपियों में व्यंजन एवं स्वर का संयुक्त रूप होना तथा संधि का भी लिपि पर प्रभाव पड़ना। लिपि में मात्रा की कल्पना अपने आप में विलक्षण है और इसके कारण लिपिबद्ध करने में जो लाभ होता है उसका कोई विकल्प नहीं है। इन बिन्दुओं को स्पष्ट करने के लिए हमें देवनागरी की वर्णमाला पर संक्षिप्त दृष्टिपात करना उचित होगा, जो प्राचीन काल से प्राप्त है और संस्कृत-हिन्दी के अतिरिक्त मराठी, नेपाली, सिन्धी आदि भाषाओं की भी लिपि है।

> "यह कहने में संकोच नहीं है कि हमारा साहित्य पूर्णतः समृद्ध है तद्नुसार लिपि भी अधिकाधिक समृद्ध और वैज्ञानिक है।"

यहाँ यह भी स्वीकार करना होगा कि भाषा धाराप्रवाह के रूप में निर्मित होती है, जबकि लिपि का निर्माण निष्णात मनुष्य की प्रतिभा की देन है। देवनागरी लिपि का जहाँ लघुत्तम विवरण हमें अपनी परम्परा में प्राप्त है वहीं स्वर-व्यंजन के रूप में विस्तृत विश्लेषण भी उपलब्ध होता है, जो अन्य भाषाओं की लिपियों में सुगमतया प्राप्त नहीं है। पाणिनि के शिवसूत्र में देवनागरी वर्णमाला का लघुत्तम विवरण देखा जा सकता है जिसमें ९ स्वर और ३४ व्यंजन हैं। जब स्वरों में ह्रस्व और दीर्घ के रूप में विभाजन किया जाता है तथा अनुस्वार, विसर्ग भी जोड़े जाते हैं तो ४८ वर्ण होते हैं। इनका और विस्तार करते हुए पाणिनी शिक्षा में ६३ या ६४ वर्णों का विवरण दिया गया है। इतना ही नहीं संस्कृत व्याकरण की पुस्तकों में स्वरों का और भी विभाजन किया गया है और इस तरह लगभग १३२ स्वर हो जाते हैं, जो व्यंजन के अतिरिक्त हैं। इस कारण स्वरों का पहले ह्रस्व, दीर्घ और प्लुत के रूप में विभाजन करना, फिर उनका उदात्त, अनुदात्त स्वरित के रूप में विभाजन करना फिर उनका अनुनासिक और निरनुनासिक रूप में विभाजन करना होता है। इस प्रकार 'अ', 'इ', 'उ' और 'ऋ' वर्णों के अठारह-अठारह भेद (कुल बहत्तर भेद) 'लृ' वर्ण के बारह भेद (दीर्घ नहीं होते हैं) और 'ए', 'ओ', 'ऐ', 'औ' के बारह-बारह भेद (ह्रस्व नहीं)। यदि वर्णलिपि को वैज्ञानिक मानने वालों के तर्क स्वीकार किए जाएँ तो इन १३२ स्वरों के लिए १३२ लिपियाँ चाहिए। व्यंजनों के लिए तो उनके अतिरिक्त लिपियाँ आवश्यक होंगी ही, जिनमें य, र, ल, व के लिए दो-दो लिपियाँ वाञ्छित होंगी। इस बिन्दु पर वर्णलिपि को सार्थक मानने वालों तथा देवनागरी में मात्रा की कल्पना को नकारने वालों के तर्कों का क्या हाल होगा, यह चिन्तनीय है क्योंकि मात्रा की कल्पना के माध्यम से स्वरों के लगभग १३२ भेदों को १८ मात्राओं में समेट दिया जाता है अर्थात् स्वर वर्णों के लिए जो लिपियाँ निर्धारित हैं उनका प्रयोग तो कुछ स्थलों पर स्वतंत्र रूप में होता है किन्तु जब व्यंजनों के साथ स्वर का मिश्रण होता है तो स्वरलिपि मात्रा के रूप में परिवर्तित हो जाती है। अतः यह कहने वालों के पास कोई उत्तर नहीं हो सकता है कि व्यंजन के साथ स्वर के स्थान पर मात्रारूपी प्रतीक का उपयोग किया जाना अवैज्ञानिक है। फिर से कहना होगा कि स्वर के स्थान पर मात्राओं के प्रयोग से न केवल लिपियों की संख्या आश्चर्यजनक रूप में कम हो जाती है, किन्तु लिखने के स्थान में भी कमी आती है। इस महत्वपूर्ण बिन्दु को नकारना या उसकी अनदेखी करना नितान्त अज्ञानता का ही सूचक है।

दूसरी ओर, जैसाकि ऊपर कहा गया, देवनागरी लिपि में अधिकतम वर्णों के प्रतीक हैं और संस्कृत के ६३ या ६४ वर्णों की कल्पना की गई है। हिन्दी में भले ही कुछ ध्वनियों का तथा उनकी लिपियों का प्रयोग नहीं होता तो भी अन्य लिपियों की तुलना में नागरी लिपि की संख्या ४८ या ४६ है।

इस स्थिति में यह कैसे कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि जो अक्षरात्मक लिपि है, सार्थक और वैज्ञानिक नहीं है, अपितु वर्णात्मक लिपि वैज्ञानिक है। जो वर्णलिपि संस्कृत की या यों कहें हिन्दी की समस्त प्रचलित ध्वनियों का भी प्रतिनिधित्व नहीं कर सकती, तो वह वैज्ञानिक कैसे हो सकती है। अतः 'कि' लिखने के लिए 'क' के साथ 'इ' मिलाना गलत है, अपितु इसमें क्+इ लिखा जाना चाहिए।

इस तर्क में भी कोई दम दिखाई नहीं पड़ता कि देवनागरी में अंग्रेजी या विदेशी भाषाओं की जो ध्वनियाँ आई हैं उनके लिए प्रतीक चिह्न या लिपियों की व्यवस्था नहीं है क्योंकि संस्कृत भाषा के संदर्भ में यंम ध्वनि की जो व्यवस्था है उसके माध्यम से इन लिपियों की कमी पूरी की जा सकती है। दूसरी ओर जो अन्य भाषाओं से आगत ध्वनियाँ हैं, उनके लिए नए प्रतीक चिह्न बनाना या स्वीकार करना कोई अपराध नहीं है, अपितु किसी भाषा के स्वाभाविक विकास का उदाहरण है।

यह सर्वमान्य तथ्य है कि संस्कृत से सम्बन्धित देवनागरी की ध्वनियाँ कम्प्यूटर लिपि के लिए अधिकतम उपयुक्त हैं। तथापि इस बिन्दु पर असहमति व्यक्त करना व्यर्थ का वितंडा है। इस तथ्य को नकारना सर्वथा अनुचित है। और कम्प्यूटर में वही लिपियाँ उपलब्ध होंगी, जो भरी जायेंगी।

संक्षेप में यह कहा जाना चाहिए कि देवनागरी लिपि में अधिकतम ध्वनियों के प्रतिनिधित्व की क्षमता है जिसमें स्वर अधिकतम हैं और व्यंजन भी अधिक हैं। मात्रा की कल्पना भी विलक्षण है, जिसका प्रयोग स्वरलिपि के स्थान पर किया जाता है। इस प्रकार स्वर वर्णों का द्विविध प्रयोग होता है। देवनागरी में जो संयुक्ताक्षर या संध्यक्षर हैं वे भी अपरिहार्य हैं, क्योंकि हिन्दी भी पद-रचना के क्षेत्र में संयोगात्मक भाषा है और दो व्यंजनों के संयुक्त रूप को प्रदर्शित करने हेतु लिपि के भिन्न रूप को स्वीकार करना आवश्यक है, सन्धि केवल दो व्यंजनों की नहीं, अपितु स्वरों की भी होती है। उल्लेखनीय है कि चार या पाँच प्रकार की सन्धि मानी गई हैं तथा प्रकृति भाव भी स्वीकार किया गया है। जहाँ सन्धि होती है वहाँ स्वरों की सन्धि तो होती ही है और दो वर्ण मिलकर एक तीसरा वर्ण बन जाते हैं।

दूसरी ओर वक्ता की असमर्थता को लिपि की कमजोरी नहीं कह सकते। कहा गया है-

देवी वाक् व्यवकीर्णेयमशक्तैरभिधातृभिः।

वैदिक संस्कृत में स्वरों का विभाजन करते हुए उदात्त, अनुदात्त और स्वरित की कल्पना की गई है और उसकी लिपि भी उपलब्ध है, जो अन्य भाषाओं में अनुपलब्ध है। यद्यपि हिन्दी में प्लुत का प्रयोग होता है, विशेषतः किसी को बुलाने या सम्बोधित करने में। अतः व्यवहार में प्लुत का प्रयोग होने पर भी उसकी लिपि का न होना एक प्रत्यक्ष कमी है। इन विशेषताओं के कारण देवनागरी लिपि का उपयोग करना सार्थक ही नहीं, वैज्ञानिक है और उसके विकल्प ढूँढ़ने के योजनाबद्ध प्रयास कुटिल नीति के ही परिणाम प्रतीत होते हैं।

- शुकदेव शास्त्री
बी-१०२, वानप्रस्थ आश्रम, फेज-२
पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार-२४९४०५, चलभाष- ९४१४०६३१७८
(साभार- वैचारिकी)

न्यास द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश
अब ४००० रु. सैकड़ा
सत्यार्थ प्रकाश प्रचार सहयोग अब
एक हजार प्रतियों के लिए १५००० रु.

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित
सत्यार्थप्रकाश
अवश्य खरीदें।
घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१
अब मात्र कीमत ₹ 45 में
४००० रु. सैंकड़ा
शीघ्र मंगवाएँ

विश्व भर से सहस्रों की संख्या में आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

महाराणा सज्जन सिंह जी द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को मेवाड़ में लाकर जो कार्य किया गया उससे मेवाड़ राजपरिवार व आम जनता धन्य हो गई। मैं आर्य सामज द्वारा किये गये प्रयास को प्रणाम करता हूँ। सभी बधाई के पात्र हैं।

- डॉ. अजातशत्रु, उदयपुर

आर्य सामज के प्रवर्तक रहे प्रातः स्मरणीय दयानन्द सरस्वती हमारे भारत राष्ट्र के एक 'नगीना' थे। उनकी अद्भुत और अकल्पनीय ज्ञान दर्शन के कारण ही उन्हें धूर्ततावश मार दिया गया। अगर अपनी अल्प आयु में नहीं मार दिए जाते तो 'भारत सोने की चिड़िया' आज भी बना होता। लेकिन यह हमारी बदकिस्मती रही कि उनको कितनी ही बार जहर देकर मारने का प्रयास हुआ, अन्ततः इसी कुटचाल से उन्होंने अपने प्राण त्यागे। उन्हें खोना हमारे स्वर्णिम भारत के लिए दुखद अध्याय है।

सृष्टि रचना विषय में वैदिक विज्ञान के सम्मुख पंगु है यह आधुनिक विज्ञान

सृष्टि रचना की सटीक जानकारी प्राप्त करने हेतु भले ही आज हमारे आधुनिक भौतिक विज्ञान द्वारा नित्य नयी-नयी महामशीनों द्वारा महाप्रयोग हो रहे हैं, फिर भी वैज्ञानिक सृष्टि रचना के पूर्ण सत्य से काफी दूर हैं। चाहे हाल ही में उन्होंने ब्रह्माण्ड के जन्म की पुनर्रचना को एच. एल.सी. महामशीन (सर्न) जिनेवा में दोहरा दिया है। उन्होंने लघु बिग बैंग पैदा करके महामशीन के अन्दर सीसे (स्मंक) के अणुओं को इलैक्ट्रॉन से मुक्त करके लगभग दस ट्रिलियन तापमान जो कि हमारे सूर्य के केन्द्रीय भाग से दस लाख गुणा ज्यादा है, अपनी प्रयोगशाला में पैदा किया। उन मुक्त अणुओं को प्रकाश की गति से टकरा कर उनका वैसा ही सूप तैयार किया गया जैसाकि वे मानते हैं कि करीब १३.६ अरब वर्ष पहले बिग-बैंग (बड़े धमाके) के बाद हमारे ब्रह्माण्ड की रचना के समय था। उन्होंने इस कृत्रिम प्रयोग में सर्वोच्च तापमान एवं कल्पनातीत घनत्व को पैदा किया जिसके अन्दर अणु का केन्द्रक बनाने वाले प्रोटोन एवं न्यूट्रॉन तक पिघल कर क्वार्क्स और गुलुऑन का सघन 'सूप' बन जाता है। जिसे वैज्ञानिक 'क्वार्क गुलुऑन प्लाज्मा' भी कहते हैं। इस प्रयोग के माध्यम से उन्हें यह उम्मीद है कि संसार में प्राप्त चार भौतिक शक्तियों में से एक शक्ति 'स्ट्रांग न्यूक्लियर फोर्स' को वे भली प्रकार से अब समझ सकेंगे। यह वही फोर्स है जो अणुओं को अपने न्यूक्ली में बाँधने के साथ-साथ उनमें द्रव्यमान को भी पैदा करता है। सृष्टि रचना का मूल मंत्र यानि 'द ग्रेंड यूनिफाइड थ्योरी' जिसे सभी तालों की कुञ्जी 'थ्योरी ऑफ एवरीथिंग' भी कह सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार इस भौतिक जगत् में हमें मुख्यतः जो चार बल मिलते हैं वे इस प्रकार हैं १. इलैक्ट्रोमैग्नेटिक बल २. स्ट्रांग न्यूक्लियर बल, जिसका ऊपर वर्णन हुआ है ३. वीक न्यूक्लियर बल तथा ४. गुरुत्वाकर्षण बल, जो कि पृथ्वी और अन्य ग्रह नक्षत्रों को आकाश में टिकाए हुए है तथा जिसके बारे में हॉल ही में विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग ने अपनी नई पुस्तक 'द ग्रैंड डिजाइन' में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति में ईश्वरीय सत्ता को नकारते हुए कहा कि- बिग बैंग हेतु गुरुत्वाकर्षण के भौतिक नियम से ही ब्रह्माण्ड स्वतः ही शून्य से अस्तित्व में आया है। जिसका मैंने अपने गत् लेख 'परमात्मा ने ही की है दुनिया की रचना' (जिसे दैनिक जागरण, टंकारा समाचार, जनज्ञान एवं साप्ताहिक आर्य प्रतिनिधि (रोहतक) इत्यादि ने अपने पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किया। वे सब धन्यवाद के पात्र हैं) में विश्लेषण किया। जिसके अन्दर मैंने वैदिक विज्ञान के आधार पर स्टीफन हॉकिंग के भौतिक सिद्धान्त को चुनौती दी तथा वैदिक मत कि 'ईश्वर सृष्टि रचना का निमित्त कारण तथा प्रकृति उपादान कारण है' को प्रतिपादित किया।

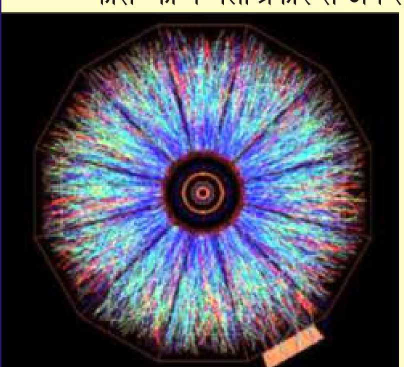

आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक, {प्रमुख श्री वैदिक स्वस्ति पंथा न्यास, भागलभीम वाया भीनमाल जिला जालोर (राजस्थान)} ने तो बिग बैंग के सिद्धान्त को सन् २००७ ई. में ही वीर नर्मद द. गुजरात विश्वविद्यालय, सूरत के अन्दर भौतिक वैज्ञानिकों के सम्मुख खुली चुनौती दी थी तथा उसकी कमियों को उजागर करते हुए, वैदिक विज्ञान में अनन्त द्रव्यमान मानकर (धमाके के पूर्व) कहा था कि यह सिद्धान्त बिल्कुल गलत है क्योंकि सृष्टि के आरम्भ में मूल प्रकृति अपने सूक्ष्म रूप सत्व, रजस व तमस में पदार्थ को अनन्त स्थान पर घोर अन्धकार में कम से कम तापमान पर निष्क्रिय रूप में थी और ईश्वर की इच्छा से ही क्रमशः सत्व, रज व तम यानि बल, गति और द्रव्यमान से सृष्टि की उत्पत्ति होती है।

आधुनिक विज्ञान की बिग बैंग की थ्योरी सत्य की कसौटी पर खरी नहीं उतरती तथा शून्य से सभी की उत्पत्ति मानना अर्थात् शून्य में अनन्त द्रव्यमान एवं समस्त ऊर्जा को समाहित मानना तो स्वयं में ही घोर अवैज्ञानिक प्रतीत हो रहा है। जहाँ पर आधुनिक विज्ञान सर्वप्रथम अनन्त ताप ऊर्जा को मानता है वहीं पर वैदिक विज्ञान सृष्टि रचना के प्रारम्भ में शून्य द्रव्यमान को तथा प्रकृति को अति सूक्ष्म कारण रूप में सत्व, रजस, तमस गुणों से युक्त मानता है तथा सर्वोच्च सत्ता (परमेश्वर) में उसे लीन मानता है तथा ईश्वर ही सारे जगत् का निर्माण करता है तथा वही सभी प्रकार के भौतिक एवं आत्मिक बलों का दाता है जो कि जड़ प्रकृति के परमाणुओं में सृष्टि रचना के समय निस्पन्द पड़े अणुओं में गति पैदा करके सृष्टि रचना को प्रारम्भ करता है। भौतिकविदों की पहुँच अभी तक केवल और केवल मात्र जड़ प्रकृति तक ही सीमित है जबकि वैदिक विज्ञान अभौतिक तत्व आत्मा एवं परमात्मा की सत्ता जो चेतन तथा ज्ञानवान तत्व है को मानता है जिसे हमारे ऋषि मुनियों ने सृष्टि के आरम्भ में ही समझ व जान लिया था। यह उनकी योग साधना एवं तपश्चर्या के कारण ही सम्भव हो सका। उस परमपिता परमेश्वर ने ही हमें युगादि में हमारे चार ऋषि अग्नि, वायु, आदित्य एवं अंगिरा के माध्यम से एक-एक वेद का ज्ञान प्राप्त कराया। इस ज्ञान-विज्ञान के सामने सभी भौतिक वैज्ञानिक आज भी पंगु नजर आते हैं। भौतिक वैज्ञानिक इन्द्रियों एवं उनमें सहायक उपकरणों द्वारा भौतिक पदार्थ को ही देख व समझ सकते हैं तथा अभौतिक तत्वों से वे अभी बहुत दूर हैं। हाँ! क्वांटम भौतिकी से भी परे जहाँ पर रूप, रस, गंध, स्पर्श, शब्द (वेव) अर्थात् सूक्ष्मकण एवं लहर से भी आगे अभी भौतिक विज्ञान को जाना पड़ेगा तभी सृष्टि रचना को ये भली प्रकार समझ सकते हैं। अति सूक्ष्म नियमों की जानकारी में अब वे विवश होकर जिज्ञासु हो रहे हैं, तभी तो अमेरिका में हमारे वेद-वेदांग तक को सृष्टि उत्पत्ति एवं काल को जानने हेतु उन्हें खंगाला जा रहा है।

वेद में जो कि नासदीय के सूक्त कहे जाते हैं तथा जिनमें सृष्टि रचना से पूर्व प्रलयावस्था का बड़ा ही सटीक वर्णन (चित्रण) मिलता है। प्रलयावस्था में प्रकृति की क्या स्थिति थी? क्या रूप था? तथा अव्यक्त अवस्था से सृष्टि रचना कैसे प्रारम्भ हुई? ये सूक्त बहुत ज्यादा ही अपने आप में गंभीर हैं। साथ ही बौद्धिक जनों के लिए एक पहेली जैसे प्रतीत होते हैं। जैसे कि आधुनिक विज्ञान के अन्दर क्वांटम भौतिकी भी सूक्ष्म स्तर पर पहेली ही नजर आती है। जिसका वर्णन हम आगे करेंगे। मेरे विचार से इन सूक्तों का ठीक-ठीक अर्थ तो कोई योगीजन ही कर व समझ सकता है फिर भी विद्वान् जनों द्वारा किए गए अर्थ को मैं आपके सामने रख रहा हूँ-

प्रथम मंत्र में ऋषि कहता है कि सृष्टि रचना से पूर्व प्रलयावस्था में न सत् था न ही असत्। यहाँ पर हमें सत् का विच्छेद तो समझ आता है लेकिन दोनों का एक साथ विच्छेद क्या सम्भव है? जबकि छान्दोग्य उपनिषद् ६.२.१ से ३ में कहा गया कि पहले मात्र असत् ही था। जैसा कि आज का भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग ने कहा है। इस असत् (अभावशून्य) से सत् (भाव सामग्री) हो गया। फिर कहा गया कि हे सोम्य। यह भला कैसे हो सकता है? जबकि सत् और असत् दोनों ही आपस में एक दूसरे के विपरीत गुण वाले हैं तथा दोनों की प्रकृति भिन्न-भिन्न है। फिर भला इस वेद मंत्र में दोनों एक साथ कैसे? है ना यह एक पहेली? इसका कारण यह है कि हमने असत् को प्रायः अभाव का पर्याय समझ लिया। जब सृष्टि उत्पन्न ही नहीं हुई तो प्रकृति तो अपने सूक्ष्म रूप (कारण रूप) अव्यक्त अवस्था में थी जो अदृश्य थी तथा अपने त्रिगुणात्मक रूप थी तथा कार्य रूप में न होने के कारण से वेद ने इसे सत् नहीं कहा। फिर अभाव से भाव तो पैदा हो ही नहीं सकता अर्थात् शून्य से द्रव्य कैसे उत्पन्न हो गया? इसलिए उस अवस्था में प्रकृति द्रव्य कारण रूप में

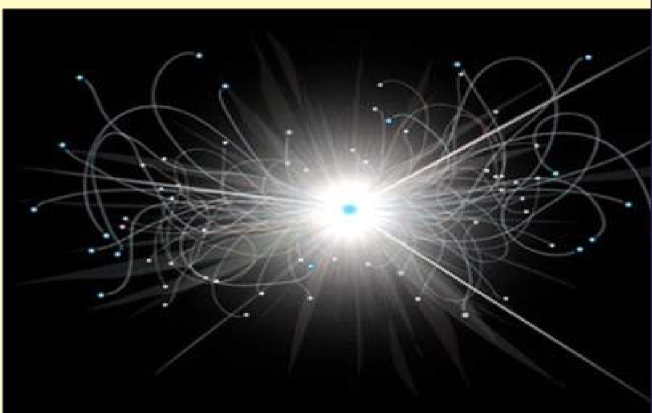

अतिसूक्ष्म परमात्मा में लीन होने के कारण वेद ने कहा कि असत् भी नहीं था अर्थात् शून्य भी नहीं था यदि कोई समझे कि शून्य से ही हमारी सृष्टि बन गई, ऐसा नहीं हो सकता। हाँ! अणु-परमाणुओं से भरा हुआ जैसा आज है ऐसा अन्तरिक्ष भी नहीं था तथा नहीं परे आकाश ही था फिर उस अवस्था में कहा पर क्या ढ़का हुआ था? सब कुछ किसके आश्रय था, क्या बहुत बड़ा गंभीर जल था? नहीं। तब न तो जीवन ही था तथा न ही मृत्यु थी। रात तथा दिन नहीं थे। क्योंकि जब सूर्य ही नहीं था तो रात-दिन कैसे सम्भव हैं?

उस समय तो केवल वह परम तत्व (चेतन) परमात्मा ही अपनी स्वेच्छा से बिना वायु के सांस ले रहा था अर्थात् वही एक जीवित सत् था वह सूक्ष्म प्रकृति के साथ था। विशेष प्रलयावस्था में परमात्मा प्रकृति को अपने में निगल लेता है अर्थात् प्रकृति भी सूक्ष्मतम रूप में आकार रहित होकर अदृश्य हो जाती है। उस समय चारों ओर अन्धकार ही अन्धकार प्रकृति कोहरे रूप में अज्ञेय अवस्था में परमात्मा के सम्मुख तुच्छ अवस्था में रहती है। जैसाकि आजकल शनि के चन्द्रमा टाईटन को वैज्ञानिक बतलाते हैं। उस वातावरण में परमात्मा के तप से वह प्रकृति व्यक्त होने लगी अर्थात् परमात्मा ने उस निस्पन्द पड़ी प्रकृति के परमाणुओं में स्पन्द (हलचल) पैदा कर दी। आधुनिक विज्ञान प्रकृति के सत्व, रज, तम रूप तक पहुँच चुका है जिसे वे इलेक्ट्रोन, न्यूट्रान तथा प्रोट्रॉन जानता है। परमात्मा ने प्रकृति को कारण रूप से कार्य रूप में कर दिया। इसी रूप को आज भौतिक वैज्ञानिक बड़ी-बड़ी मशीनों के माध्यम से अपनी प्रयोगशाला में उच्चताप पैदा करके मैटर तथा ऐंटी मैटर में टक्कर कराकर उन ईशकणों को ढूँढ़ना चाहता है जो कि उनके हिसाब से सृष्टि रचना के समय (बड़े धमाके) के साथ एक सेकण्ड के हजारवें हिस्से समय में उन कणों में द्रव्यमान पैदा हो गया जिन्हें उन्होंने गॉड पार्टिकल (हिग्सबोसान) का नाम दे रखा है। इस ताप की क्रिया को वेद ने तप कहा है यानि जड़ प्रकृति में वह शाश्वत ऊर्जा स्रोत परमात्मा जो वेद में कहे गये सलिल प्राइम ऑडियल मैटर (सृष्टि रचना का मूल उपादान, पानी नहीं) को ईश्वरीय तेज उन परमाणुओं में आकर्षण-विकर्षण की शक्ति पैदा करता है तथा वेद ने इसे ही ईक्षण कहा है। इस पूर्व समय के अन्दर मन को रेत जो पहले से ही था उसमें संकल्प पैदा कर देता है। जिसे ज्ञानीजनों ने जान लिया कि असत् से सत् का भाईपन है। यहाँ परमात्मा ने ही वेदानुसार ऋत और सत्य के जोड़े को उत्पन्न किया जिससे यह सारा संसार बना जिसे अग्नि और सोम का जोड़ा कहें तो ज्यादा उपयुक्त है। आधुनिक विज्ञान जिसे धनात्मक विद्युत (+) तथा ऋणात्मक विद्युत (-) कहता है। ऋग्वेद २.१६.२ के अनुसार सारे जगत् में जितना भी ये स्थूल पदार्थ है वह समस्त विद्युत के अलावा और कुछ नहीं। जिससे ये सारा जगत् ताने-बाने के रूप में बना हुआ है। फिर उसकी किरणें आड़ी तिरच्छी फैली नीचे भी आश्चर्य तथा ऊपर भी आश्चर्यजनक अवस्था का वर्णन वेद ने किया है। वीर्य को धारण करने वाले बलशाली जीवन महान् थे तथा इधर आत्मा की धारण शक्ति भी महान् थी तथा उसके पूरे प्रयत्न का बल था। इस प्रकार वेद में नासदीय सूक्त द्वारा सृष्टि रचना का एक वैज्ञानिक विवेचन हमें मिलता है लेकिन सत्य तो वह केवल प्रजापति परमेश्वर ही जानता है कि यह विविध प्रकार की सृष्टि कैसे तथा कहाँ से बनी क्योंकि विद्वान् जन तथा सूर्य आदि दिव्य पदार्थ भी सब बाद में बने हैं। जिससे वह विविध प्रकार की सृष्टि उत्पन्न हुई है, वही इस सृष्टि का धारक (कर्त्ता) पालक और संहर्त्ता है। अतः हे मानव! तू उसे ही सृष्टिकर्त्ता मान तथा दूसरे किसी को इसका कर्त्ता न मान। इस तरह सृष्टि रचना का निमित्त कारण वह परब्रह्म है तथा किस सामग्री से रची? उपादान कारण प्रकृति है। किसके लिए रची? जीवों के कर्मानुसार फल देने हेतु। इस प्रकार ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों ही अनादि तत्व हैं। भौतिक वैज्ञानिक ब्रह्माण्ड रचना में जिन-जिन कणों को मूल कण समझ रहा है वे मूल कण है ही नहीं। जिन प्रश्नों के उत्तर अभी भी आधुनिक विज्ञान के पास नहीं उनका भी समाधान वेद में है आधुनिक कण भौतिकी भी वेदों की ही देन है तथा सूक्ष्म भौतिकी के जनक कहे जाने वाले वैज्ञानिक हाईजनवर्ग ने यह बात स्वयं उस समय स्वीकारी जब वह ठाकुर रविन्द्रनाथ टैगोर के शान्ति निकेतन में अतिथि के रूप में रहे थे। क्वांटम भौतिकी मूल में वेदों की ही देन है। महान् वैज्ञानिक नील्स बोर ने लगभग एक सौ वर्ष पहले कहा था कि यदि कोई क्वांटम भौतिकी से चौंकता नहीं तो समझो उसे वह समझ ही नहीं आ रही। क्योंकि क्वांटम भौतिकी में पदार्थ अति सूक्ष्म स्तर पर एकदम बदल जाते हैं, जैसा उन्हें हम स्थूल स्तर पर शास्त्रीय भौतिकी से पदार्थ अथवा ऊर्जा के व्यवहार को समझते हैं वे उस तरह नहीं रहते। यथा मान

> ***"'After these conversations with Tagore,' he said, 'some of the ideas that had seemed so crazy suddenly made much more sense. That was a great help for me."*** *(Uncommon Wisdom, p. 43)*

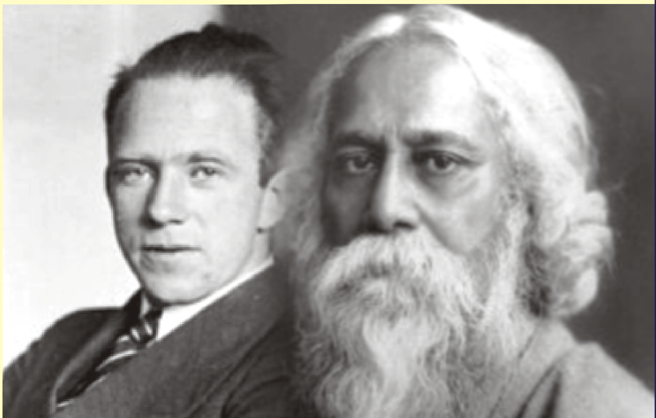

लो कि कोई गाड़ी सौ किलोमीटर प्रति घण्टा की गति से दिल्ली से जयपुर जा रही है तो हम उसे भौतिकी में ठीक-ठीक बता सकते हैं कि वह आधे घण्टे अथवा एक घण्टे बाद कहाँ होगी? लेकिन यदि हम किसी सूक्ष्म कण की बात करें तो वह किसी भी वक्त कहीं पर भी हो सकता है? हम उसका स्थान नहीं बता सकते वह कण दिल्ली जयपुर के बीच में हर स्थान पर हो सकता है। है ना यह एक आश्चर्य की बात। दूसरा क्वांटम में आश्चर्य यह है कि यदि कोई आवेशित कण अगर किसी विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र के पास से गुजरता है तो वह कण अवश्य प्रभावित होगा। भले ही वह कण उस क्षेत्र की सीमा से भी बाहर क्यों न हो? यह अहरानाव बोम का प्रभाव क्वांटम के सात आश्चर्यों में से एक है। वह अस्थानिकता प्रभाव कितना अनोखा है कि चाहे दो कण कितनी भी दूरी पर क्यों न हो वे आपस में प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। इस प्रकार से क्वांटम को समझने हेतु वैज्ञानिकों को भी समय की अपनी अवधारणा को बदलना होगा, यह अहरानोव का कहना है। अहरानोव कहते हैं कि आवेशित कण एक साथ दो जगह पर नहीं होता बल्कि समय आगे और पीछे दोनों दिशाओं में चलता है जहाँ पर आगे और पीछे जाने वाले समय मिलते हैं, उससे कण की स्थिति तय होती है अर्थात् कण का वर्तमान या भूत क्या होगा यह भविष्य में भी उसकी स्थिति से तय होता है हम कह सकते हैं कि भविष्य भी अतीत को तय करता है जैसे अतीत भविष्य को तय करता है। प्रलयावस्था का समय ब्राह्मरात्रि सृष्टि का समय ब्राह्मदिन। इस प्रकार प्रलय से सृष्टि और सृष्टि से प्रलय एक चक्र में समय चलता रहता है जिसमें भूत, वर्तमान और भविष्य के किसी भी समय को गणना द्वारा वेदों से जाना जा सकता है। इस तरह समय को वर्तमान से वेद भी दोनों दिशाओं में मान कर चलता है। वेद भी यही दर्शाता है कि भविष्य, अतीत को तथा अतीत भविष्य को दर्शाता है। अब समय आ गया है वेदों के शास्त्रीय एवं सिद्धान्त पक्ष के साथ-साथ प्रयोग पक्ष की भी हमें अतीव आवश्यकता है तथा प्रयोग से वैदिक विज्ञान की स्वच्छता एवं श्रेष्ठता प्रमाणित की जानी चाहिए। मैं आचार्य अग्निव्रत जी नैष्ठिक जी से प्रार्थना करूँगा कि वे अपने वैदिक विज्ञान एवं भौतिकी विज्ञान शोध केन्द्र में शीघ्र ही एक वैदिक विज्ञान की प्रयोगशाला स्थापित करें। तभी स्व. पंडित भगवद्दत्त, पंडित गुरुदत्त आदि का सपना साकार हो सकेगा। भविष्य की आशा के साथ।

- श्यामसिंह आर्य 'वेद निपुण'
अध्यक्ष- मानव उत्थान संस्था
औरंगाबाद, मित्रोल जिला- पलवल (हरियाणा)

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
"सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

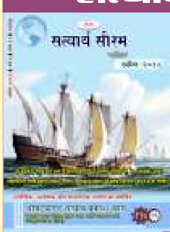

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ईश्वर के अस्तित्व की वैज्ञानिकता- १

आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक

हम ईश्वर तत्व पर निष्पक्ष वैज्ञानिक दृष्टि से विचार करते हैं। हम संसार के समस्त ईश्वरवादियों से पूछना चाहते हैं कि क्या ईश्वर नाम का कोई पदार्थ इस सृष्टि में विद्यमान है भी वा नही? जैसे कोई अज्ञानी व्यक्ति भी सूर्य, चन्द्र, पृथिवी, जल, वायु, अग्नि, तारे, आकाशगंगाओं, वनस्पति एवं प्राणियों के अस्तित्व पर कोई शंका नहीं करेगा, क्या वैसे ही इन सब वास्तविक पदार्थों के मूल निर्माता व संचालक ईश्वर तत्व पर सभी ईश्वरवादी शंका वा संदेह से रहित हैं? क्या संसार के विभिन्न पदार्थों का अस्तित्व व स्वरूप किसी की आस्था व विश्वास पर निर्भर करता है? यदि नहीं तब इन पदार्थों का निर्माता माने जाने वाला ईश्वर क्यों किसी की आस्था व विश्वास के आश्रय पर निर्भर है? हमारी आस्था न होने से क्या ईश्वर नहीं रहेगा? हमारी आस्था से संसार का कोई छोटे से छोटा पदार्थ भी न तो बन सकता है और न आस्था के समाप्त होने से किसी पदार्थ की सत्ता नष्ट हो सकती है, तब हमारी आस्थाओं से ईश्वर क्योंकर बन सकता है और क्यों हमारी आस्था समाप्त होने से ईश्वर मिट सकता है? क्या हमारी आस्था से सृष्टि के किसी भी पदार्थ का स्वरूप बदल सकता है? यदि नहीं, तो क्यों हम अपनी-अपनी आस्थाओं के कारण ईश्वर के रूप बदलने की बात कहते हैं? संसार की सभी भौतिक क्रियाओं के विषय में कहीं किसी का विरोध नहीं, कहीं आस्था, विश्वास की बैसाखी की आवश्यकता नहीं, तब क्यों ईश्वर को ऐसा दुर्बल व असहाय बना दिया, जो हमारी आस्थाओं में बंटा हुआ मानव और मानव के मध्य विरोध, हिंसा व द्वेष को बढ़ावा दे रहा है। हम सूर्य को एक मान सकते हैं, पृथिवी आदि लोकों, अपने-अपने शरीरों को एक समान मानकर आधुनिक भौतिक विद्याओं को मिलजुल कर पढ़ व पढ़ा सकते हैं, तब क्यों हम ईश्वर और उसके नियमों को एक समान मानकर परस्पर मिलजुल कर नहीं रह सकते? हम ईश्वर की बनाई हुई सृष्टि एवं उसके नियमों पर बिना किसी पूर्वाग्रह के संवाद व तर्क-वितर्क प्रेमपूर्वक करते हैं, तब क्यों इस सृष्टि के रचयिता ईश्वर तत्व पर किसी चर्चा, तर्क से घबराते हैं? क्यों किंचित् मतभेद होने मात्र से फतवे जारी करते हैं, आगजनी, हिंसा पर उतारू हो जाते हैं। क्या सृष्टि के निर्माता ईश्वर तत्व की सत्ता किसी की शंका व तर्क मात्र से हिल जायेगी, मिट जायेगी?

यदि ईश्वर तर्क, विज्ञान वा विरोधी पक्ष की आस्था व विश्वास तथा अपने पक्ष की अनास्था व अविश्वास से मिट जाता है, तब ऐसे ईश्वर का मूल्य ही क्या है? ऐसे परजीवी, दुर्बल, असहाय, ईश्वर की पूजा करने से क्या लाभ? उसे क्यों माना जाये? क्यों उस कल्पित ईश्वर और उसके नाम से प्रचलित कल्पित धर्मों में व्यर्थ माथापच्ची करके धन, समय व श्रम का अपव्यय किया जाये?

- क्रमश................

- 'आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक' (वैदिक वैज्ञानिक)
('वेदविज्ञान-अलोकः' से उद्धृत)

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- **सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो।** सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
१५००००	दस हजार	११२५००	७५००
७५०००	५०००	३७५००	२५००
१५०००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य
मंत्री-न्यास

भंवरलाल गर्ग
कार्यालय मंत्री

डॉ.अमृत लाल तापड़िया
उपमंत्री-न्यास

रक्षाबन्धन पर्व के पावन अवसर पर विशेष

रक्षाबन्धन पर्व तथ्य और मान्यताएँ

राधेश्याम धूत

भारत में पर्वों व उत्सवों का स्वरूप बदलता रहता है। इसलिए किसी भी पर्व के मूल प्रयोजन तथा उसके उद्गम के बारे में निश्चित रूप से कहना अत्यन्त कठिन है। रक्षाबन्धन पर्व भी एक ऐसा ही उदाहरण है। प्राचीन काल में रक्षा बन्धन मुख्यतया ब्राह्मणों का त्यौहार माना जाता था, जिस प्रकार विजयादशमी क्षत्रियों, दीपावली वैश्यों तथा होली शूद्रों का। रक्षाबन्धन ब्राह्मणों द्वारा की जाने वाली एक धार्मिक क्रिया श्रावणी कर्म का हिस्सा था, जिसमें प्रतिवर्ष श्रावण मास की पूर्णिमा के दिन, एक निश्चित विधि-विधान से श्रावणी कर्म करने के बाद, ब्राह्मण अपने यजमानों के दाहिने हाथ पर एक सूत्र बाँधते थे, जिसे रक्षासूत्र कहा जाता था और इसके बदले ब्राह्मण को दक्षिणा स्वरूप रुपये, पैसे प्राप्त होते थे। {श्रावणी पर्व पर वेद के पठन-पाठन-प्रचार का कार्य विशेष रूप से प्रारम्भ किया जाता था। - संपादक} यही रक्षासूत्र कालान्तर में राखी कहलाने लगा। ऐसा प्रतीत होता है कि आरम्भ में ब्राह्मण केवल क्षत्रियों को ही रक्षासूत्र बाँधते थे। युद्धों के प्रवृत्त रहने वाले क्षत्रिय वर्ण को ही रक्षा की सबसे ज्यादा आवश्यकता रहती थी। लेकिन बाद में अन्य पर्वों की भाँति यह त्यौहार भी सभी वर्णों द्वारा मनाया जाने लगा तथा ब्राह्मणों ने दक्षिणा प्राप्ति के लिए वैश्यों को भी रक्षासूत्र बाँधना आरम्भ कर दिया। लेकिन यह परम्परा कब और क्यों आरम्भ हुई, यह शोध का विषय है। इस संदर्भ में एक अत्यन्त महत्वपूर्ण संकेत ब्राह्मणों द्वारा यजमानों के हाथ पर रक्षासूत्र (राखी-मौली) बाँधते समय बोले जाने वाले एक मंत्र से अवश्य मिलता है, जो इस प्रकार है-

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल॥

इस मंत्र का सामान्यतया यह अर्थ किया जाता है कि जिससे दानवों के महाबली राजा बलि बाँधे गए थे, उसी से तुम्हें बाँधता हूँ। हे रक्षे! तुम चलायमान् न रहो (हिन्दू धर्म कोष) धर्मशास्त्र के ज्ञाता विद्वानों के अनुसार इसका तात्पर्य यह है कि रक्षासूत्र बाँधते समय ब्राह्मण या पुरोहित अपने यजमान को कहता है कि जिस रक्षासूत्र से दानवों के महापराक्रमी राजा बलि धर्म के बंधन में बाँधे गए थे, अर्थात् धर्म में प्रयुक्त किए गए थे, उसी सूत्र से मैं तुम्हें बाँधता हूँ यानि धर्म के लिए प्रतिबद्ध करता हूँ। तत्पश्चात् पुरोहित रक्षासूत्र को कहता है कि हे रक्षे! तुम स्थिर रहना। स्थिर रहना।' इसका अर्थ यह हुआ कि रक्षासूत्र बाँधने का उद्देश्य ब्राह्मणों द्वारा अपने यजमानों को धर्म के लिए प्रेरित एवं प्रयुक्त करना है।

लेकिन परम्परागत मान्यता के अनुसार इसका सम्बन्ध एक पौराणिक कथा से भी माना जाता है जो कृष्ण एवं युधिष्ठिर के संवाद के रूप में भविष्योत्तर पुराण में वर्णित बताई जाती है। भारतीय व्रतोत्सव में यह कथा संक्षेप में इस प्रकार दी गई है। युधिष्ठिर ने प्रश्न किया- 'रक्षाबन्धन की विधि क्या है, जिससे दुष्ट प्रेतपिशाचादि से रक्षा हो सके तथा रोगों व दुःखों का नाश हो सके।' इस पर कृष्ण ने इन्द्राणी द्वारा इन्द्र की आयु बढ़ाने के लिए जो प्रक्रिया अपनाई उसका इतिहास सुनाया, जो निम्न प्रकार है।

प्राचीन काल में देवताओं और असुरों के बीच एक युद्ध हुआ जो बारह वर्षों तक चलता रहा। इसमें दैत्यों की विजय व देवताओं का पराभव हुआ। देवता श्रीहीन हो गए। इन्द्र युद्ध से पलायन कर वापस अमरावती चले गए। दैत्यराज के आदेश से यज्ञ यागादि सभी कर्म बन्द कर दिए गए। धर्म का नाश होने लगा। इस पर इन्द्र ने बृहस्पति को आमंत्रित कर,

उनके समक्ष दैत्यों से निर्णयात्मक युद्ध करने की इच्छा प्रकट की। बृहस्पति ने समझाया कि अभी परिस्थितियाँ देवताओं के प्रतिकूल हैं इसलिए युद्ध में अनिष्ट भी हो सकता है। लेकिन इन्द्र माने नहीं तथा युद्ध के लिए तत्पर हो गए। इन्द्र के इस अपूर्व उत्साह से प्रभावित होकर बृहस्पति ने रक्षा का विधान किया तथा उनके निर्देशानुसार इन्द्राणी ने श्रावण की पूर्णिमा को प्रातःकाल इन्द्र के दाहिने हाथ पर रक्षा की पोटली बाँधी जिसके कारण इन्द्र को असुरों पर विजय प्राप्त हुई। रक्षा सूत्र बाँधते समय बोले जाने वाले उपरोक्त मंत्र का भी इस कथा में उल्लेख है। कहते हैं कि इस कथा से प्रेरित होकर ब्राह्मण

अपने यजमानों के हाथ पर रक्षा सूत्र बाँधने लगे।

लेकिन इस कथा की, रक्षासूत्र बाँधते समय बोले जाने वाले मंत्र से कोई संगति प्रतीत नहीं होती है। इस मंत्र के पीछे भाव है, यजमान को धर्म में प्रयुक्त करने का। अर्थात् धर्म की रक्षा का। जबकि उपरोक्त कथा का आशय है यजमान की रक्षा व विजय प्राप्ति का। उक्त मंत्र यजमान के प्रति आदेशात्मक है, पर कथा आशीर्वादात्मक है। इसलिए इस कथा के सन्दर्भ में उक्त मंत्र का अर्थ इस प्रकार होगा– 'जिससे दानवों के राजा बलि बाँध लिए गए थे, वह मैं तुम्हें बाँधता हूँ। हे रक्षे! तुम चलायमान न होना। चलायमान न होना।' इसका यह अभिप्राय हुआ कि ब्राह्मण अपने यजमान को कहता है कि जिस सूत्र को इन्द्र के हाथ पर बाँधने से दानवों के राजा पराजित हुए और इन्द्र ने विजय प्राप्त की, वह रक्षासूत्र मैं तुम्हारे हाथ पर बाँधता हूँ जो तुम्हारी रक्षा करेगा व विजय प्राप्त करायेगा। यह अर्थ स्वीकार करने पर '**तेन त्वाम् प्रतिबध्नामि**' का अर्थ 'वह तुम्हारे बाँधता हूँ' मानना पड़ेगा, जबकि परम्परा से इसका अर्थ 'उससे तुम्हें बाँधता हूँ' किया जाता है। सरसरी तौर पर देखने से दोनों अर्थ समान नजर आते हैं। पर दोनों के भाव व प्रयोजन में बड़ा अन्तर है।

इस प्रसंग में एक और बात ध्यान देने लायक है। भविष्योत्तर पुराण में आई इस कथा में बताया गया है कि बृहस्पति ने उपरोक्त मंत्र से रक्षा का विधान किया था। इससे स्पष्ट है कि दानवों के राजा बलि को रक्षासूत्र में बाँधने की घटना इन्द्र द्वारा असुरों के विरुद्ध युद्ध के अभियान के पहले ही घटित हो चुकी थी। इसलिए फिर प्रश्न उपस्थित हो जाते हैं– बलि को कब, क्यों और किसने बाँधा था? तथा इसका उल्लेख कहाँ मिलता है?

इन प्रश्नों का उत्तर न तो भविष्योत्तर और न किसी अन्य पुराण में देखने में आया है। राजा बलि का प्रसंग मुख्यतया वामन अवतार से जुड़ा हुआ है। वामन अवतार की कथा भागवत् वामन पुराण एवं पद्म पुराण में आती है। इन तीनों ही पुराणों में राजा बलि को किसी सूत्र में बाँधने का उल्लेख नहीं है। भागवत् पुराण में बलि को गरुड़ द्वारा वरुण पाश से बाँधे जाने की कथा अवश्य है। लेकिन उसका सन्दर्भ अलग है। ऐसी अवस्था में, जब तक धर्मशास्त्रों के विशेषज्ञों द्वारा रक्षासूत्र बाँधते समय बोले जाने वाले मंत्र के मूल स्रोत का पता नहीं लगा लिया जाता है, तब तक इस प्रथा के उद्‌गम तथा इसके मूल प्रयोजन के बारे में निश्चित रूप से कुछ भी कहना अत्यन्त कठिन है।

मेरा अनुमान है कि इस प्रथा का प्रादुर्भाव उस काल में हुआ जब वर्णव्यवस्था सुदृढ़ रूप से स्थापित थी। इस व्यवस्था के अन्तर्गत जहाँ ब्राह्मण वर्ण देश व काल के अनुरूप धर्म का निरूपण व प्रतिपादन किया करता था, वहीं धर्म के पालन का तथा अन्य वर्णों की सुरक्षा का दायित्व क्षत्रियों का होता था। इसलिए संभवतः प्रतिवर्ष एक निर्धारित तिथि श्रावण मास की पूर्णिमा पर ब्राह्मणों द्वारा क्षत्रिय यजमानों के दाहिने हाथ पर रक्षासूत्र बाँधकर उन्हें ब्राह्मण रक्षा तथा धर्म के संरक्षण के लिए प्रतिबद्ध करने की प्रथा कायम की गई होगी। यह वस्तुतः यजमान को धर्म में बाँधने की प्रक्रिया थी। यज्ञोपवीत की भाँति रक्षासूत्र भी व्यक्ति को अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व का स्मरण कराता रहता था।

ऐसा प्रतीत होता है कि वर्णाश्रम धर्म में कुछ लचीलापन आ जाने के बाद धर्मशास्त्रों द्वारा वैश्यों को भी रक्षासूत्र बाँधे जाने की व्यवस्था दे दी गई तथा भविष्योत्तर पुराण में (जो काफी अर्वाचीन माना जाता है) कृष्ण युधिष्ठिर संवाद के रूप में इन्द्र-इन्द्राणी कथा के माध्यम से इस प्रथा को आशीर्वादात्मक रूप दे दिया गया, जिसके अनुसार यह माना जाने लगा कि रक्षासूत्र यजमान को विजय, सुख व समृद्धि प्रदान करता है।

उपरोक्त विवेचन का अब केवल ऐतिहासिक एंव एकेडमिक महत्व ही रह गया है। क्योंकि ब्राह्मणों द्वारा यजमानों के

रक्षासूत्र बाँधने की प्रथा समाप्त होती जा रही है। अब तो किसी विशेष पूजा अथवा अनुष्ठान के अवसर पर ही ब्राह्मणों या पुरोहितों को यजमानों के हाथों पर रक्षासूत्र बाँधते देखा जा सकता है। {यह भी पौराणिक क्रिया ही है, वैदिक नहीं। - संपादक} नई पीढ़ी के अधिकांश युवाओं को तो श्रावण मास की पूर्णिमा के इस महत्वपूर्ण पक्ष की जानकारी भी नहीं होगी।

आजकल तो रक्षाबन्धन का त्यौहार बहिनों द्वारा अपने

भाइयों के राखी बाँधने के रूप में ही मनाया जाता है। लेकिन उपरोक्त कथाओं के सन्दर्भ में जिज्ञासा हो सकती है कि बहिनें अपने भाइयों से संरक्षण प्राप्त करने की कामना से उन्हें रक्षासूत्र (राखी) से बाँधती हैं या अपने भाइयों के रक्षार्थ व उनकी श्रीवृद्धि हेतु उन्हें राखी बाँधती हैं। मेरी दृष्टि में, बहिनों और भाइयों के मन में दोनों ही भाव रहते होंगे। यह प्रथा भी क्यों और कब शुरू हुई, यह भी शोध का विषय है। पर इतना अवश्य कहा जा सकता है कि भविष्योत्तर पुराण में आई इन्द्र-इन्द्राणी की कथा से इनका कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि यदि ऐसा होता तो जिस प्रकार इन्द्राणी ने अपने पति के हाथ पर रक्षासूत्र बाँधा था उसी प्रकार पत्नियाँ अपने-अपने पति के हाथ पर राखी बाँधतीं। कुछ कथावाचक पण्डित इस प्रथा का उद्गम वामन अवतार के समय लक्ष्मी द्वारा राजा बलि के हाथ पर राखी बाँधकर उन्हें अपना भाई बना लेने के आख्यान से जोड़ते हैं। लेकिन इसका उल्लेख किसी भी पुराण अथवा कथा साहित्य में नहीं मिलता है। कुछ लोग बताते हैं कि चित्तौड़ की रानी दुर्गावती (या कर्मावती?) ने हुमायूँ को राखी भेजकर अपना भाई बनाया था, तबसे यह प्रथा चल निकली। लेकिन इस घटना का भी कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता है।

जो भी कारण रहा हो, वर्तमान में यह त्यौहार बहन-भाई के बीच सहज एवं स्वाभाविक प्रेम की अभिव्यक्ति का बड़ा सुन्दर माध्यम बन गया है तथा इस त्यौहार ने राष्ट्रीय स्वरूप प्राप्त कर लिया है। इसकी व्यापकता एवं लोकप्रियता का अनुमान तो इस बात से ही लगाया जा सकता है कि रक्षाबन्धन को सार्वजनिक अवकाश घोषित कर दिया जाता है। लेकिन इस पर्व को केवल उत्सव का ही रूप न देकर, इस अवसर पर इसके मूल प्रयोजन का भी स्मरण करना चाहिए। प्रत्येक महिला किसी न किसी की बहिन होती है। इसलिए बहिनों द्वारा बाँधे जाने वाले सूत्र की भावना को समझते हुए हमें उनकी रक्षा का संकल्प लेना चाहिए। इससे नारी जाति अपने आपको सुरक्षित महसूस करने लगेगी। पर जिस प्रकार राखियों के बाजार सजने लगे हैं तथा कीमती व आकर्षक राखियाँ बनाने की होड़ शुरू हुई है, उससे कभी-कभी भय होता है कि कहीं भाई-बहिन का यह सहज एवं सात्विक प्रेम कीमती राखियों से नहीं तोला जाने लगे जो कि तोला जाने लगा है।

तीर्थराज,जेकब रोड
सिविल लाइन्स, जयपुर-३०२००६
चलभाष- ०९८२९०६३१२३

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष, श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभा आर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार)

समाचार

स्वामी अग्निवेश जी पर हमला निन्दनीय

स्वामी अग्निवेश जी के ऊपर झारखण्ड के पाकुड़ में कुछ असामाजिक

तत्वों ने बीभत्स हमला करके उन्हें घायल कर दिया, यह अत्यधिक चिन्ता तथा शोक का विषय है। हमारे समाज की यह दिशा भयावह है। आप किसी के कथन से सहमत हों या न हों, उसका विरोध-विकल्प, हिंसा कदापि नहीं हो सकती। एक ८० वर्षीय संन्यासी जिसने युवावस्था में ही समस्त सुखों का त्याग कर संन्यास ग्रहण कर, अपना सम्पूर्ण जीवन समाज की विषमताओं को दूर करने में लगा दिया, बन्धुआ मजदूरों के लिए काम किया हो, जिसने सतीप्रथा के उन्मूलन के लिए देवराला तक पदयात्रा का आयोजन किया हो, अस्पृश्य कहे जाने वाले बन्धुओं को सम्मान दिलाने हेतु नाथद्वारा मन्दिर में हरिजन-प्रवेश हेतु आन्दोलन खड़ा किया हो, शराब-बन्दी के लिए काम किया हो, लाख असहमति के बाद भी ऐसे व्यवहार का पात्र नहीं हो सकता। इन पंक्तियों के लेखक की स्वामी अग्निवेश जी से विगत ४ दशकों से अनेक मुद्दों पर असहमति रही है और जिसे हमने कभी छिपाया भी नहीं है, खुलकर लिखा भी है। परन्तु इस सबमें स्नेह-भाव तिरोहित नहीं हुआ। स्वामी जी के वक्तव्य अनेक बार ऐसे भी रहे हैं जो हमारी दृष्टि में आर्यसमाज को शर्मिन्दगी की स्थिति में डाल देते हैं। अभी जो हंगामा हुआ है उसका कारण अग्निवेश जी द्वारा प्रधानमंत्री मोदी जी के विरुद्ध अनुचित टिप्पणी है जो पक्षपातपूर्ण भी है क्योंकि अन्धविश्वास से ग्रसित क्रियाजालों को तर्क की कसौटी पर कसने की बात स्वामी जी एक ही समुदाय के लिए कहते हैं अन्यों के लिए नहीं, जबकि जिनको ये अपना गुरु कहते हैं अर्थात् महर्षि दयानन्द सरस्वती, वे पूर्ण पक्षपात रहित होकर सभी समुदायों की समीक्षा करते थे। यह भी ठीक है कि अपनी उम्र और आश्रम की मर्यादा का ध्यान रखते हुए स्वामी जी को अपनी बात इस प्रकार कहनी चाहिए कि उसे उपदेश के रूप में लोग ग्रहण करें। पक्षपातरहितता तथा सर्वकल्याण की भावना संन्यासी में सर्वोपरि होनी चाहिए। केवल हिन्दू और वह भी किसी एक राजनैतिक दल के ही अंधविश्वास व पाखण्ड में ग्रसित हैं दूसरे नहीं ऐसा मानना और बार-बार कहना अथवा १४०० वर्ष पूर्व पैदा जिस व्यक्ति की शिक्षाओं पर आज दुनिया भर में आतंक की फसल काटी जा रही है उसे क्रान्तिकारी संत बताना स्वामी जी की पक्षपातरहितता और संतुलित विचारशक्ति पर प्रश्नचिह्न खड़ा करता है, निस्संदेह यह सब सत्यार्थ प्रकाश की आत्मा से दूर है। पर इससे किसी को भी मारपीट का या स्वामी अग्निवेश जी पर जानलेवा हमला करने का अधिकार नहीं मिल जाता। यह आशा करते हुए कि आगे स्वामी जी अपने को अधिक संतुलित करेंगे हम इस घटना की निन्दा करते हैं और कानून के पहरुओं से अपेक्षा रखते हैं कि वे दोषी व्यक्तियों को यथोचित दण्ड दिलवाएंगे।

– अशोक आर्य, उदयपुर

योग-ध्यान, साधना शिविर

जम्मू काश्मीर की सुरम्य एवं मनोरम पहाड़ियों में स्थित आनन्दधाम आश्रम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्य महात्मा चैतन्यस्वामी जी की अध्यक्षता एवं पूज्य माँ सत्यप्रिया यतिजी के सान्निध्य में दिनांक १६ से २३ सितम्बर २०१८ तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया है। जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना, प्राणायाम, योगासन आदि का क्रियात्मक अभ्यास कराया जाऐगा। इस अवसर पर वैदिक प्रवचन तथा योगदर्शन एवं उपनिषदादि पर भी व्याख्यान होंगे। शिविर में स्वामी वेदपतिजी, वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी, स्वामी नित्यानन्द जी आदि अन्य अनेक विद्वान् भी पधार रहे हैं। इस अवसर पर पूज्य चैतन्यस्वामीजी के ब्रह्मत्व में प्रतिवर्ष की भाँति सामवेद पारायण-यज्ञ का आयोजन भी किया गया है। अतः इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. ०६४१६१०७७८८, ०६४१६७६६६४६ व ०६४१६१६८४५१ पर तुरन्त सम्पर्क करें।

– भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

पूज्य स्वामी तत्वबोध सरस्वती जी की स्मृति में भजन संध्या का आयोजन संपन्न

दिनांक २२ जुलाई २०१८ को नवलखा महल, उदयपुर स्थित माता लीलावन्ती सभागार में न्यास के संस्थापक अध्यक्ष पूज्य स्वामी तत्त्वबोध सरस्वती जी की पुण्यतिथि की पूर्व संध्या पर भजन संध्या का आयोजन किया गया। जिसमें उदयपुर नगर के पूर्व विधायक श्री त्रिलोक चन्द पूर्बिया ने मुख्य अतिथि, बांसवाड़ा क्षेत्र के पूर्व सांसद श्री महावीर भगौरा तथा आर्यसमाज आबूरोड के प्रधान श्री मोती लाल आर्य ने विशिष्ट अतिथि के रूप में भाग लिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ अतिथियों को ओम दुपट्टा अर्पित कर उनके स्वागत सम्मान से हुआ। तत्पश्चात श्री सुधाकर पीयूष तथा श्री इन्द्रदेव पीयूष द्वारा प्रभुभक्ति के भजनों के प्रस्तुतीकरण से सारा वातावरण भक्तिमय हो गया। तत्पश्चात सुमेरपुर से पधारे आर्यसमाज के जाने-माने भजनोपदेशक श्री केशवदेव जी ने भजनों व गीतों के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री पूर्बिया ने, स्वामी तत्वबोध जी द्वारा जिस प्रकार जीर्ण-शीर्ण भवन को पुरुषार्थ पूर्वक स्वयं का सब कुछ अर्पित कर भव्य स्मारक का रूप दिया गया उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। श्री महावीर भगौरा एवं मोती लाल जी आर्य ने स्वामी जी के प्रति भावांजलि प्रस्तुत की। प्रारम्भ में न्यास के मंत्री श्री भवानीदास आर्य ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने पूज्य स्वामीजी के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताओं को प्रस्तुत करते हुए आर्यजनों को उनके बताये मार्ग पर चलने का आह्वान किया। न्यास के संयुक्त मंत्री प्रो. डॉ. अमृत लाल तापडिया द्वारा सभी को धन्यवाद दिए जाने के पश्चात् न्यास के पुरोहित श्री नवनीत आर्य के शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। कार्यक्रम का सफल व सुन्दर संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया।

– नारायणलाल मित्तल, कोषाध्यक्ष-न्यास

चर्च द्वारा धर्मांतरण व अन्य दुष्कृत्यों की जाँच हेतु आयोग तथा धर्मांतरण रोधी कानून बने - विहिप

नई दिल्ली ११ जुलाई २०१८। विश्व हिन्दू परिषद् ने आज कहा है कि चर्च व उसके द्वारा संचालित तथा-कथित सेवा कार्य धर्मांतरण ही नहीं अपितु कई प्रकार के अवैधानिक-अनैतिक कृत्यों के केन्द्र बन चुके हैं। मानवता के सभी मापदण्डों को ध्वस्त करते हुए उनके दुष्कर्मों की एक लम्बी शृंखला सामने आ रही है। विहिप के केन्द्रीय संयुक्त महामंत्री डॉ. सुरेन्द्र जैन ने केन्द्र सरकार से चर्च पादरियों तथा उनके द्वारा संचालित संस्थाओं की गहन जाँच हेतु एक आयोग बनाने, धर्मांतरण विरोधी कानून बनाने, पर्यटन के बहाने धर्मांतरण व धर्म-प्रचार में लिप्त विदेशियों पर शिकंजा कसने व तथा-कथित अनाथ आश्रम इत्यादि में पादरियों द्वारा बच्चों व ननों का शोषण किए जाने पर अबिलम्ब अंकुश लगाने की माँग की है।

मदर टेरेसा द्वारा स्थापित राँची स्थित 'निर्मल हृदय आश्रम' में किए जा रहे यौनाचार, बच्चों के व्यापार व अन्य अवैध कार्यों के पर्दाफास से पूरी मानवता कराह रही है। 'आश्रम' में अनाथ लड़कियों से दुष्कर्म कर उनके बच्चों को बेच दिया जाता था। केवल इसी आश्रम से गत कुछ दिनों में ही २८० बच्चे गायब हुए हैं।

विश्व हिन्दू परिषद् केन्द्र सरकार से यह माँग करती है कि-

१. सर्वोच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश की अध्यक्षता में नियोगी कमीशन जैसा एक जाँच आयोग बनाया जाए जो मदर टेरेसा व अन्य मिशनरियों द्वारा स्थापित संस्थाओं की विस्तृत जाँच कर इनके विदेशी फंडिंग, आतंकी संगठनों से इनके सम्बन्ध, हिन्दुओं के प्रति घृणास्पद साहित्य के निर्माण, ननों तथा बच्चों से दुष्कर्म तथा बच्चों के अवैध व्यापार जैसे विषयों पर यह आयोग गहन जाँच करे।

२. अवैध धर्मांतरण रोकने हेतु धर्म स्वतन्त्रता अधिनियम बनाया जाए।

३. पर्यटन वीजा पर भारत आकर धर्मांतरण या धर्म-प्रचार में लिप्त विदेशी पर्यटकों का वीजा रद्द कर उनके विरुद्ध कड़ी से कड़ी कानूनी कार्यवाही हो।

- विनोद बंसल (राष्ट्रीय प्रवक्ता), विश्व हिन्दू परिषद्

पतंजलि देगा देश भर में ११ हजार युवाओं को रोजगार

पतंजलि युवा भारत द्वारा आर्य समाज निम्बाहेड़ा में २० जुलाई २०१८ गुरुवार को जिला स्तरीय पाँच दिवसीय पूर्ण आवासीय युवा स्वावलम्बन शिविर सम्पन्न हुआ।

भारत स्वाभिमान के जिला प्रभारी डॉ. एम. एल. धाकड़ ने बताया कि परम पूज्य स्वामी रामदेव जी महाराज द्वारा देशभर में पतंजलि के फूड डिवीजन में जिले के निम्बाहेड़ा, बड़ी सादडी, कपासन, चित्तौड़गढ आदि तहसीलों से २७ युवाओं का चयन किया गया है जो जिले भर में पतंजलि के उत्पादों का डिस्ट्रीब्यूशन व सेल्समैन का कार्य करेंगे।

शिविर प्रभारी विशाल आर्य के अनुसार शिविरार्थियों को गुरुकुल कांगडी के आचार्य डॉ. ज्ञानेन्द्र व आचार्य कर्मवीर मेधार्थी ने भारतीय संस्कृति व स्वदेशी के बारे में जानकारी दी। भरत आर्य, राधेश्याम धाकड़ व किशनलाल आदि ने शिविर में सहयोग प्रदान किया।

प्रतिस्वर

अशोक कुमार जी आर्य, सप्रेम नमस्ते।

मैं मेरी ओर से व जिला नागौर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान होने के कारण जिला की ओर से सत्यार्थ प्रकाश न्यास मंडल, उदयपुर की समस्त कार्यकारिणी को धन्यवाद करता हूँ कि महर्षि दयानन्द द्वारा बताये मार्ग का अनुसरण कर रहे हैं। सत्यार्थ प्रकाश का अति सुन्दर तरीके से प्रचार देश-विदेश तक हो रहा है। अशोक जी आपका लेख 'इतिहास पर बदनुमा दाग' को मैंने ध्यान लगाकर देखा व पढ़ा अगर सरकार, भारत के इतिहास पर विचार कर सुधार करे तो आर्यावर्त्त देश बन सकता है आपका लेख मुझे रुचिकर लगता है और देशहित में सुधार की ओर ले जाने वाला लगता है। धन्यवाद।

- किशनाराम आर्य बीलू, नागौर

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर इलाहाबाद में

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल के तत्वावधान में इस वर्ष का राष्ट्रीय शिविर दिनांकः २७ मई, २०१८ से ०३ जून, २०१८ तक इलाहाबाद (उ.प्र.) में लगाया गया। शिविर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल रहा।

- मृदुला चौहान, संचालिका

शोक समाचार

यह जानकर अत्यन्त दुःख हुआ है कि न्यास के कार्यकर्त्ता श्री देवीलाल पारगी के बड़े भाई श्री कालुजी का देहावसान दिनांक १६ जुलाई २०१८ को हृदयाघात के कारण हो गया।

न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार अपनी संवेदना प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०६/१८ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/१८** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्रीमती सरोज वर्मा; जयपुर (राज.), श्री हिरालाल बलाई; उदयपुर (राज.), श्री इन्द्रजीत देव; यमुनानगर (हरियाणा), श्री तुलसीराम आर्य; बीकानेर (राज.), श्री रमेश चन्द्र राव; मन्दसौर (म.प्र.), श्री महेश चन्द्र सोनी; बीकानेर (राज.), श्री यज्ञसेन चौहान; विजयनगर (अजमेर), श्री राम प्रसाद श्रीवास्तव; लखनऊ (उ. प्र.), श्रीमती निर्मल गुप्ता; फरीदाबाद (हरियाणा), श्रीमती परमजीत कौर; नई दिल्ली, श्री किशनाराम आर्य बीलू; नागौर (राज.), श्री श्याम मोहन गुप्ता; इन्दौर (म.प्र.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्री प्रधान जी; आर्यसमाज, बीकानेर (राज.), श्रीमती उषा देवी; बीकनेर (राज.), श्री रमेश चन्द्र प्रियदर्शन; सीतामढी (बिहार), वासुदेवभाई मगनलाल ठक्कर (कारिया); बनासकांठा (गुजरात), मीना वासुदेवभाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेवभाई ठक्कर; बनासकांठा (गुजरात)। सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ २० पर अवश्य पढ़ें।

स्वास्थ्य

बरसात में स्वास्थ्य का पानी पानी

वर्षा ऋतु में पानी की वर्षा से धरा पर ज्यादा मात्रा में पानी होने से शरीर से पानी निष्कासन की गति में भी परिवर्तन होता है। पीने के पानी में कई तरह के कैमीकल मिल जाते हैं। इस मौसम में सबसे ज्यादा पानी दूषित होता है और दूषित पानी से ही हजारों बीमारियाँ पैदा होती हैं।

१. दूषित पानी में नहाने पर त्वचा में कई तरह के रोग जैसे- दाद, खाज, खुजली, एक्जीमा, फोड़े, फुन्सी, अलाईयाँ, कील, मुहांसे।

बचाव के उपायः-

बार-बार पानी में नहीं नहायें, साबुन कास्टिक का प्रयोग नहीं करें। गर्म करके पानी से नहायें या नीम के पानी से नहायें, त्वचा को अच्छी तरह साफ रखें, गीला नहीं रखें। पानी के प्रभाव को कम करने के लिए सरसों या तिल का तेल लगावें। एक-दूसरे के कपड़ों व साबुन का प्रयोग नहीं करें।

खाने के उपाय में:-

१. पीपल (छोटी-छोटी) को उबालकर पीयें।
२. गुनगुना पानी पीयें।
३. सौंठ, सोंफ, कालीमिर्च, लौंग का प्रयोग करें।

२. बालों का झड़ना-सफेद होना-गंजा होना-रूसी होना-डेन्ड्रफ-दो मुँह के होना।

बचाव के उपायः-

१. बालों में कैमीकल युक्त साबुन, शैम्पू से बचें।
२. गीला नहीं रखें, बार-बार बरसात में नहीं भिगोयें।
३. गीले बालों में तेल नहीं डालें।
४. गीला या गन्दा तकिया नहीं लगायें।

खाने के उपायः-

१. त्रिफला (हरड-वहेडा-आँवला) चूर्ण शहद के साथ लेवें।
२. प्रोटीन युक्त डाईट का अधिक प्रयोग करें जैसे- अंकुरित मूँग, मैथी, मोठ, चना, मटर आदि।
३. सेक कर खाने के लिए चना, मटर, मूंगफली, जौ।
४. बालों में पका हुआ सिद्ध तैल लगावें जैसे- नीम का, भृंगराज का, आँवलें का, कपूर का तैल आदि।
५. बालों को साफ रखने के लिए-नींबू या छाछ में धोवें।

३. दूषित पानी के पीने परः-

१. उल्टीः-

खाने के उपायः-

१. पानी उबाल कर पीना।
२. अनावश्यक व चिकनी एवं बाहर की तली हुई वस्तुओं से परहेज करें।

बचाव के उपायः-

१. हल्का भोजन लें।
२. २ लोंग पीसकर ठण्डे (शुद्ध पानी) (उबला हुआ) पानी से लेवें।

दस्तः-

१. पानी जैसे पतले दस्त आते हैं, आंव खूनी व चिकना मल आता है।
२. मरोड लगकर दस्त हो जाते हैं और पानी की कमी हो जाती है।

बचाव के उपायः-

१. पेट पर गरम ठण्डा सेक करें।
२. नाभि को ठीक करावें।
३. पेट के तीन आसन उत्तानपादासन, नौकासन, शलभासन करें।

खाने के उपायः-

१. चावल, मूँग की खिचड़ी लेवें।
२. छाछ में ईसवगोल लेवें।
३. छाछ में एक चम्मच सोंठ चूर्ण को लेवें।

भूख नहीं लगनाः-

१. बार-बार व अधिक मात्रा में पानी नहीं पीवें।
२. ज्यादा पानी वाली वस्तुओं का प्रयोग नहीं करें।
३. बिना भूख के भोजन नहीं करें।

खाने के उपायः-

१. भूख बढ़ाने के लिए कसरतें, योग, व्यायाम व एक्सरसाईज करें।
२. भूख बढ़ाने वाले- लौंग, सोंठ, अदरक, अजवायन, नींबू का ज्यादा प्रयोग करें।
३. हल्का व तुरन्त पचने वाला भोजन करें। एक समय भोजन करें तो ज्यादा अच्छा। जैसे लौकी, तुरई, टिण्डा, कद्दू, ककड़ी, परवल आदि। आटा भी २-३ घण्टे पूर्व लगाकर काम में लेवें।

गैसः-

पानी के अतिप्रयोग से गैस बन जाती है ज्यादा समय तक मल रुकता है तो गैस बनने लगती है। पेट फूल जाता है।

बचाव के उपायः-

१. कच्चे फलों व सब्जियों का सलाद के रूप में प्रयोग नहीं करें।

२. पत्ते वाली सब्जी नहीं लेवें- जैसे पालक।

३. गैस खत्म करने वाले आसन करें- पवनमुक्तासन, अश्वासन व पर्वतासन।

४. पेट की हल्के हाथ से मसाज करें।

खाने के उपायः-

१. उबला हुआ सेब लेवें।

२. मूँग की दाल का पानी लेवें, हींग को मिलाकर।

३. नींबू व शहद का प्रयोग करें।

एसिडिटीः-

इस मौसम में खट्टी डकारें आम बात हो जाती है पाचन की कमी से।

बचाव के उपायः-

१. कुंजल व जलनेती इसमें अच्छा काम करती है। गुनगुना पानी दो तीन गिलास पी कर उल्टी करें।

२. भोजन सूर्यास्त से पहले, घूमना फिरना ज्यादा रखें।

३. भूख से कम खावें, नमकीन, मैदा एवं फेट को बन्द करें।

खाने के उपायः-

१. एक चम्मच सौंठ का गुनगुने पानी से सेवन करें।

२. दलिया व खिचड़ी खायें।

३. एक दो लौंग खाने के बाद चूसें।

४. खाने के बाद लगभग १० बड़ी दाख खायें।

डॉ. छैल बिहारी शर्मा
मुख्य चिकित्सक, प्राकृतिक योग चिकित्सालय
नारायण सेवा संस्थान, उदयुपर

ईमानदारी, सत्यनिष्ठा,
और सबके प्रति प्यार।
ऋषि मिशन को है समर्पित,
जिनका जीवन-व्यापार।
प्रेरित करता है हम सबको,
जिनका श्रेष्ठ व्यवहार।
हों शतायु रह निरामय,
प्रार्थना है बारम्बार।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के यशस्वी प्रधान एवं न्यास के सम्मान्य न्यासी माननीय भाई श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य के 77वें शुभ जन्मदिवस के मंगल अवसर पर न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की और से

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ

-अशोक आर्य

चिल्लाओ मत

कथा सरित

एक संन्यासी अपने शिष्यों के साथ गंगा नदी के तट पर नहाने पहुँचे। वहाँ एक ही परिवार के कुछ लोग अचानक आपस में बात करते-करते एक दूसरे पर क्रोधित हो उठे और जोर-जोर से चिल्लाने लगे। संन्यासी यह देख तुरन्त पलटे और अपने शिष्यों से पुछा-

'क्रोध में लोग एक दूसरे पर चिल्लाते क्यों हैं?'

शिष्य कुछ देर सोचते रहे, एक ने उत्तर दिया, 'क्योंकि हम क्रोध में शान्ति खो देते हैं इसलिए!'

'पर जब दूसरा व्यक्ति हमारे सामने ही खड़ा है तो भला उस पर चिल्लाने की क्या जरुरत है, जो कहना है वो आप धीमी आवाज में भी तो कह सकते हैं', संन्यासी ने पुनः प्रश्न किया।

कुछ और शिष्यों ने भी उत्तर देने का प्रयास किया पर बाकी लोग संतुष्ट नहीं हुए।

अंततः संन्यासी ने समझाया-

'जब दो लोग आपस में नाराज होते हैं तो उनके दिल एक दूसरे से बहुत दूर हो जाते हैं। और इस अवस्था में वे एक दूसरे को बिना चिल्लाये नहीं सुन सकते। वे जितना अधिक क्रोधित होंगे उनके बीच की दूरी उतनी ही अधिक हो जाएगी और उन्हें उतनी ही तेजी से चिल्लाना पड़ेगा।

'क्या होता है जब दो लोग प्रेम में होते हैं? तब वे चिल्लाते नहीं बल्कि धीरे-धीरे बात करते हैं, क्योंकि उनके दिल करीब होते हैं, उनके बीच की दूरी नाम मात्र की रह जाती है।'

संन्यासी ने बोलना जारी रखा, 'और जब वे एक दूसरे को हद से भी अधिक चाहने लगते हैं तो क्या होता है? तब वे बोलते भी नहीं, वे सिर्फ एक दूसरे की तरफ देखते हैं और सामने वाले की बात समझ जाते हैं।'

'प्रिय शिष्यों! जब तुम किसी से बात करो तो ये ध्यान रखो कि तुम्हारे हृदय आपस में दूर न होने पाएँ, तुम ऐसे शब्द मत बोलो जिससे तुम्हारे बीच की दूरी बढ़े नहीं तो एक समय ऐसा आएगा कि ये दूरी इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि तुम्हें लौटने का रास्ता भी नहीं मिलेगा। इसलिए चर्चा करो, बात करो लेकिन चिल्लाओ मत।'

साभार- हिन्दी वर्ल्ड

डॉ. सुभाष वेदालंकार का निधन आर्य समाज की अपूरणीय क्षति

संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान्, आशु कवि, उद्भट वक्ता, लेखनी के कुशल चितेरे व आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए तन-मन-धन से समर्पित डॉ. सुभाष वेदालंकार का निधन आर्य जगत् की एक ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति कदापि संभव नहीं। न्यास और हमारे प्रति डॉ. साहब के मन में अपार स्नेह था। वे समय-समय पर अपने अमूल्य सुझाव देते रहते थे। अब न्यास को एक परम हितैषी का अभाव सदैव खलता ही रहेगा। पर विधि के इस विधान के आगे सर झुकाने के अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है। संतोष व गर्व की बात यह है कि उनकी आर्य-परम्परा उनके पुत्र आदरणीय सुश्रुत जी व विश्रुत जी के माध्यम से सतत् प्रवाहमान है।

न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार के सभी सदस्य दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी आदरांजलि प्रस्तुत करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी आनन्दमयी गोद में स्थान प्रदान करें।

स्वामी सुमेधानन्द जी लोकसभा में

दिनांक १८ जुलाई २०१८ को लोकसभा में शिक्षा के अधिकार सम्बन्धी सरकारी विधेयक के समर्थन में चर्चा करते हुए प्रसिद्ध आर्य संन्यासी तथा लोकसभा में सीकर से सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को सुनकर मन हर्षित हो गया कारण कि चर्चा में स्वामीजी ने महर्षि दयानन्द की शिक्षानीति की चर्चा करते हुए 'तुल्य वस्त्र, तुल्य आसन, तुल्य खानपान' की बात रखते हुए सामाजिक विषमता को निःशेष करने में उसके महत्त्व को उकेरित किया। पूज्य स्वामी जी का आभार।

विकासवाद की मिथ्या कल्पना

प्रसिद्ध जीव विज्ञानविद् सेसिल हैमान लिखते हैं- 'मैं विज्ञान के साम्राज्य में जहाँ कहीं भी पदार्पण करता हूँ, वहीं मुझे नियम, व्यवस्था और क्रम का-सर्वोच्च सत्ता का-सबूत मिलता है।......काश लोगों को यह बोध होता कि ये खोजें इस विश्व के पीछे विद्यमान किसी सर्वोच्च बुद्धिमान सत्ता के समीप हैं।

ईश्वर को सृष्टिकर्त्ता न मानने वाला विकासवादः-

अतः यहाँ संक्षेप में विकासवाद के सिद्धान्त, जो कि ईश्वर की आवश्यकता व अस्तित्व को नकारता है, पर भी विचार कर लेना चाहिए। यद्यपि इस सिद्धान्त को बाद के वैज्ञानिकों ने ही नकार दिया है परन्तु किसी समय में इस सिद्धान्त का इतना ढोल पीटा गया था कि आज भी अधिकांश व्यक्ति इस सिद्धान्त की दुहाई देते प्रतीत होते हैं। वस्तुतः विकासवाद वैज्ञानिक निष्कर्ष न होकर पूर्णतः अनुमानों व कल्पनाओं पर ही आधारित था। स्थानाभाव के कारण इस कल्पना के मिथ्यात्व की ओर संकेत मात्र करेंगे। विकासवाद के मुख्य आधार बिन्दु संक्षेप में निम्न हैं:-

१. प्रत्येक प्राणी जीवन के लिए संघर्ष करता है।

२. सर्वाधिक योग्य ही जिन्दा रह पाता है। अतएव इस जीवन संघर्ष में विजय प्राप्त करने के लिए, पारिस्थितिकी व अन्य प्रकार की विषमताओं व बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की आवश्यकता और इच्छा से प्राणियों में सकारात्मक परिवर्तन होते हैं (अनुकूलता) जो धीरे-धीरे दूसरी प्रजाति के अस्तित्व के लिए उत्तरदायी होते हैं। इसी प्रकार जो कुछ अनिच्छित व अनुपयोगी हो जाता है वह अंग या क्रिया आगामी प्रजाति में लुप्त हो जाती है।

पहला नियम यद्यपि सामान्यतः सत्य ही प्रतीत होता है पर मनुष्य के सम्बन्ध में तो स्पष्टतः खण्डित होता है। मनुष्य का इतिहास ऐसे परोपकारी मनुष्यों से भरा पड़ा है जिन्होंने देश, समाज के हितार्थ अपनी जान न्योछावर कर दी। मानवेतर प्राणियों में भी यदा-कदा जीवनोत्सर्ग की प्रवृत्ति दिखाई देती है। एक दिलचस्प उदाहरण पतंगे का है। वह अग्नि की ओर जाता है उष्णता का अनुभव कर लौटकर चक्कर लगाता है पर अपने अनुभव से यह जानकर भी कि उसकी जान को खतरा है पुनः अग्नि की ओर जाता है और अन्ततः जलकर समाप्त हो जाता है। ऐसा क्यों? उसे ऐसा करने को कौन विवश करता है? किसने उसकी ऐसी नियति नियत की है? विचार करें।

वनस्पतिविद् बताते हैं कि कारा नामक पुष्प में परागण की क्रिया छोटी मक्खी द्वारा होती है। जब यह मक्खी ऐसे पुष्पगुच्छ जिसमें पुंपुष्प होते हैं, के अत्यन्त संकीर्ण मार्ग में कठिनाई से प्रवेश करती है तो वापस भाग जाने में एक मुसीबत और सामने आ जाती है। वह यह कि अन्दर के पार्श्व इतने चिपचिपे होते हैं कि वह टिक ही नहीं पाती तो वापस कैसे जाय? इस चिपचिपाहट से बचने के लिए वह जोर जोर से भिनभिनाती है ऐसा करने में पराग उसके चारों ओर चिपट जाता है। आश्चर्य कि पौधे का यह स्वार्थ पूरा होते ही कि मक्खी परागकणों से ओतप्रोत हो जाय, उसके पार्श्व पुनः खुरदरे हो जाते हैं और मक्खी बाहर निकल आती है।

अब जब यही परागभरी मक्खी स्त्रीगुच्छ में जाती है तो उपरोक्त प्रक्रियानुसार भिनभिनाती है और पराग का छिड़काव पुष्प में हो जाता है। इस स्त्रीगुच्छ से यह मक्खी जीवित नहीं आ पाती। क्योंकि इस बार पुष्प के पार्श्व खुरदरे नहीं होते चिकने ही बने रहते हैं और मक्खी इसी चिपचिपाहट में उलझ दम तोड़ देती है।

प्रश्न यह है कि बार-बार यह अनुभव होने पर भी उसकी जाति स्त्रीपुष्प से बचकर नहीं आ सकती यह मक्खी क्यों उसमें प्रवेश करती है? चैतन्य की सत्ता नकारने वालों के पास इसका उत्तर नहीं है। उन्हें विचारना ही होगा कि वह कौनसी शक्ति है जो उसे मृत्युवरण पर विवश करती है? वह ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं।

- अशोक आर्य, नवलखा महल, गुलाब बाग

ईश्वर सिद्धि–सृष्टिकर्त्ता होने से–

पुरुषऽएवेदꣳसर्वं यद् भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति॥ - यजु. ३१/२

जो उत्पन्न हुआ और उत्पन्न होने वाला है और जो पृथिवी आदि के सम्बन्ध से अत्यन्त बढ़ता है उस इस प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप समस्त जगत् को वह अविनाशी सुख का अधिष्ठाता परमात्मा ही रचता है।

ईश्वर सिद्धि–सृष्टिकर्त्ता होने से–

एतेन योगः प्रत्युक्तः॥ - वेदान्त दर्शन २/१/३

इससे इस बात का खण्डन जानना चाहिए कि ईश की सहायता के बिना, भूतों के योग से सृष्टि की रचना हो सकती है।

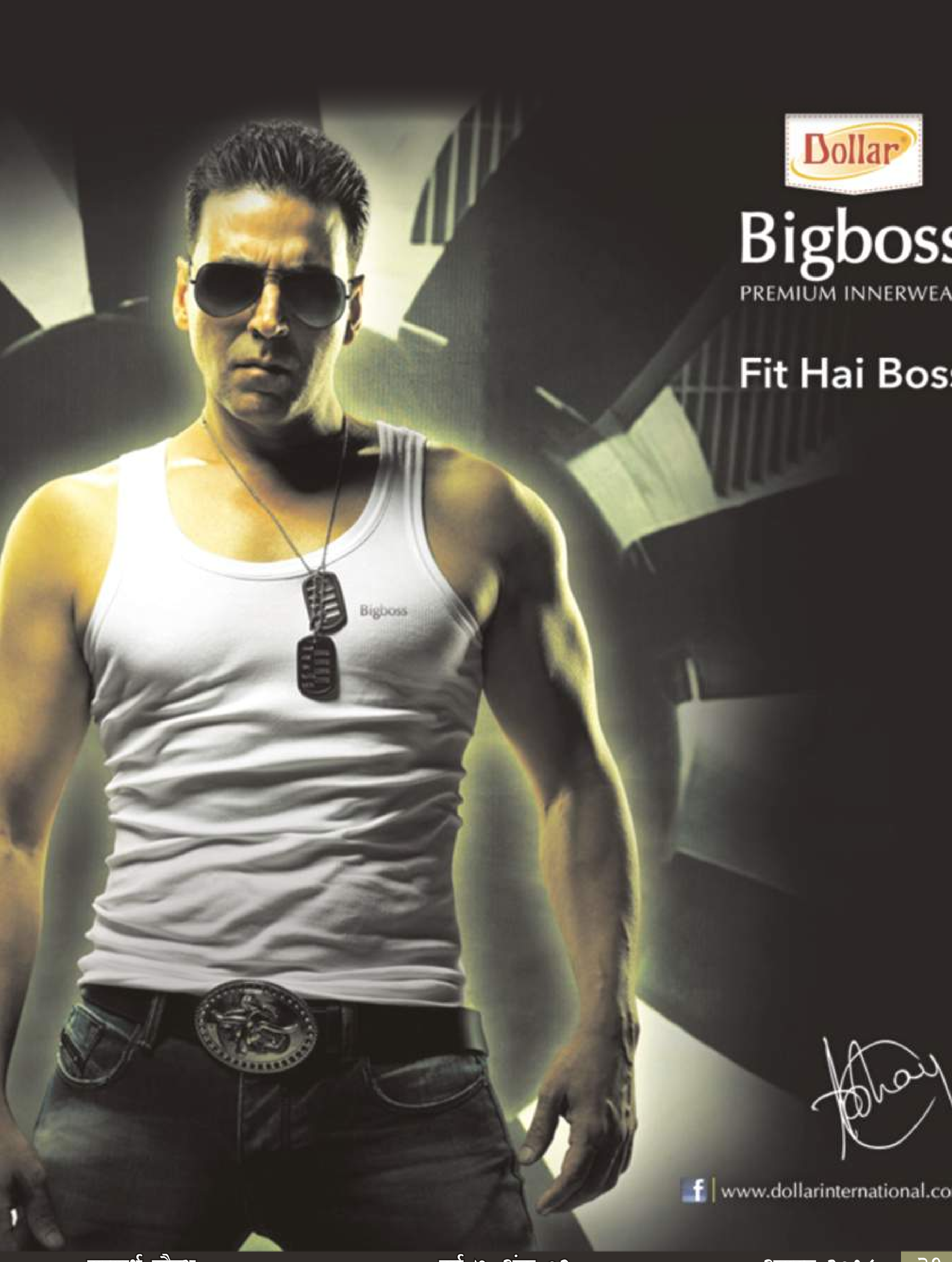
Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEA
Fit Hai Bos
Bigboss
www.dollarinternational.co

भावना यदि शुद्ध होवे,
भगिनी-भाव प्रतिष्ठित होवे।
नारीमात्र यदि पूज्या होवे,
'सत्यार्थ प्रकाश' की शिक्षा होवे,
दुष्कर्मों का अन्त होवे॥

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर